

# कान्तकरि

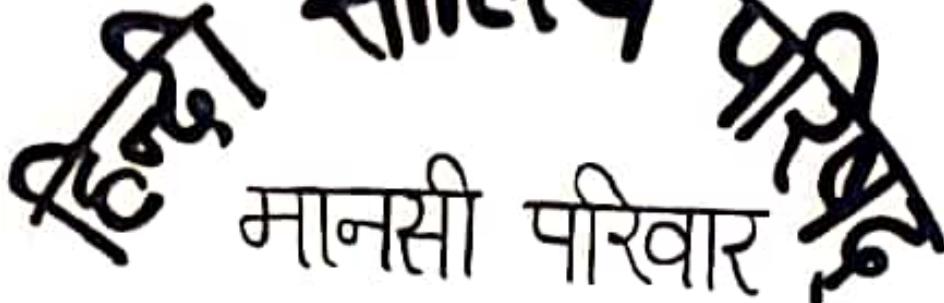
हस्तलिखित प्रतिका  
दीलतराम मठालिखिताय



## हिन्दी साहित्य परिषद्

२०१९ - २०

# साहित्य



## मानसी परिवार

2019 - 2020

संरक्षण : डॉ. सविता रौय (प्राचार्य)

प्रामर्श : डॉ. ज्योति शर्मा, डॉ. संतीष  
सैन, डॉ. कुमुलता

संपादिका : वन्दना बुडाकीटी, नाहिंद, प्रियंका  
राय

हस्तलिपि : अन्जु झा, अन्जु

आवरण : सावित्री

अन्तिम आवरण : अमित्का

भीतरी रेखांकन : अन्जु झा, अन्जु, सावित्री

मानसी साहित्यिक वार्षिक पत्रिका  
दीलतराम महाविद्यालय

दिल्ली विश्वविद्यालय 110007

# अनुक्रमणिका

| क्र० सं. | विषय               | प्रचानकार       | पृष्ठ संख्या |
|----------|--------------------|-----------------|--------------|
| १        | <u>कविता-</u>      |                 |              |
| १.       | वही आजादी          | बाहनाज          | ८            |
| २.       | सूरी               | पिंकी           | ९            |
| ३.       | सूरी - व्यथा       | मनीषा           | ११           |
| ४.       | यादें              | गुलिस्तां चौधरी | १३           |
| ५.       | जीने लगी हूँ       | स्नेहा शिंह     | १५           |
| ६.       | ऐसी ही हूँ मैं     | प्रिया          | १७           |
| ७.       | मेरा कसूर          | बिवानी          | १८           |
| ८.       | लर वगह             | साहाना देवी     | २०           |
| ९.       | हिन्दी जवान        | अमिका           | २१           |
| १०.      | जिन्दगी की घूप छोव | पलक             | २२           |
| ११.      | उम्मीदों का सागर   | निवैदिता        | २४           |
| १२.      | सूरी               | सुहां गुप्ता    | २६           |
| १३.      | मंगर               | मुस्कान         | २८           |
| १४.      | सपने               | आन्दू अमृहरि    | २९           |
| १५.      | कन्या भूषण हत्या   | दिता            | ३०           |
| १६.      | ऐ जिन्दगी !        | दीपाली          | ३२           |
| १७.      | हाँ किन्नर हूँ मैं | नाहिद सवीर      | ३३           |

# अनुक्रमांकिका

| क्र. नं. | विषय   | सानाकार                 | पृष्ठ नंबर |
|----------|--|-------------------------|------------|
| ②        | <u>निवन्द्य-</u>   |                         |            |
| 18.      | कीरीना, लोकडाउन और बदलती जीवन रैली                               | आगितका                  | 35         |
| 19.      | आधुनिक संस्कृति की नार चान्दगी में परिश्रापित करता 'शौशल मीठिया' | बन्दना बुड़ाकोटी        | 39         |
| ③        | <u>लैख-</u>  |                         |            |
| 20.      | आधुनिकता   | अंगू कुमारी             | 42         |
| 23.      | ज्ञानार्जिन के लिए पढ़े  | साहस्रा देवी            | 45         |
| 24.      | बाल मजदूरी   | साहस्रा देवी            | 47         |
| 23.      | भास्तीय किताब  | नैहा कुमारी             | 49         |
| 24.      | भास्तीय नारी का बदलता व्यक्तिप                                   | नैहा कुमारी             | 52         |
| 25.      | मेरे जापनी का भास्त  | अंशिमा सिंह             | 54         |
| 26.      | विज्ञापन की दुनिया   | स्त्रिया                | 55         |
| 27.      | अहमियत   | मानसी                   | 57         |
| 28.      | बस्त गृह मेरे लिए  | रघुता                   | 58         |
| ④        | <u>कहानियाँ-</u>   |                         |            |
| 29.      | क्या गलती थी उरकी  | नैहा सिंह               | 59         |
| 30.      | वैरियाँ भी पढ़कर नवाब बनती हैं                                   | साहस्रा देवी            | 65         |
| 31.      | भाषणमाला सिपीर   | हिन्दी साहित्य<br>परिषद | 73         |
| 32.      | वार्षिक सिपीर  | हिन्दी साहित्य<br>परिषद | 77         |

# स्मृति शैष

## गिरीश कर्नाड

|   |   |
|---|---|
| <p><b>निधन</b></p> <p>गिरीश कर्नाड का जन्म १९ मई १९३४ को हुआ। थात्या छावर्ष के जीवन-काल के बाद १० अगस्त २०१७ को इनकी मृत्यु हुई।</p>  | <p><b>अवदान</b></p> <p>देश के अंदर की प्रसिद्धि एक नाटककार के रूप में है और नमकालीन भारत के लेखक अभिनेता फ़िल्म निर्देशक के रूप में भी जाने जाते हैं।</p> |
| <p><b>पूजन</b></p> <p>साहित्यिक पुनर्जगन से उन पर क्रमी प्रभाव पड़ा कहानी ऐतिहासिक तथा पौराणिक पाली में तत्कालीन व्यक्ति को दर्शाने को अपनाया तथा लोकप्रिय हुआ। एक नाटक तुगलक लिखा गिरीश से उन्हें बहुत प्रसिद्ध मिली और वंश वृक्ष नामक कल्यासि से सिनेमा की दुनिया में कदम उठवा।</p> | <p><b>पृष्ठान</b></p> <p>१९९४ में ज्ञानपीठ, पद्मश्ची तथा पद्मभूषण जैसे पुरस्कारों को सम्मानित हैं। १९७० में फ़िल्म केयर अवार्ड को सम्मानित है।</p>        |

# स्मृति शेष

## गिरिंग बिश्वोर

|   |  |
|---|--|
| <b>निधन</b>   | <b>अवदान</b>   |
| गिरिंग बिश्वोर का जन्म ४ जुलाई १९३७ को हुआ था ४३ वर्ष के अविव काल के बाद २० फरवरी २०२० की उनकी मृत्यु ही गई   | गिरिंग बिश्वोर हिंदी के प्रासिद्ध उपन्यासकार होने के साथ स्क कथाकार, नाटककार और मशक्त आलीचक है।  |
| <b>सूचन</b>   | <b>पहचान</b>   |
| गिरिंग बिश्वोर इनका उपन्यास 'टाई घर' अत्यन्त लोकप्रिय हुआ था। वर्ष १९९१ में प्रकाशित इस कृति को १९९२ में ही 'जाहिल' अकादमी पुस्कार में नवाजा गया। इनके हासा लिखित 'पहला गिरिंग' नामक उपन्यास महान् गांधी के अफ्रीक प्रवास पर आधारित था। | गिरिंग बिश्वोर २००७ में भास्त संकार हासा भास्त के चौथे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पदम की समानित किये गये। खवाह लाल नेहरु विश्वविद्यालय में आयोजित भव्याग्रह शताब्दी विश्व सम्मेलन में समानित। |

# स्मृति शेष

## स्वयं सकाश

### निधन

स्वयं सकाश का जन्म 20 जनवरी 1947 को हुआ था 72 वर्ष के जीवनकाल के बाद केंसर से 7 दिसंबर 2019 को उनकी मृत्यु हो गई।

### अवदान

स्वयं प्रकाश अपने भग्य के प्रसिद्ध कहानीकार हैं। विद्याओं को भी अपनी लेखनी से समृद्ध किया हैं। वे हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में भाठोत्तरी पीढ़ी के बाद के अनवादी लेखन से संबंधित हैं।

### सृजन

स्वयं प्रकाश की कृतियों में शास्त्रीय के विरह चेतना का भ्राव देखने को मिलता है। आपने अपनी वृच्छाओं के माध्यम से सामाजिक जीवन में जाति, संप्रदाय और लिंग भ्रेद के विरह प्रतिकार के रूप को उभारा है।

### प्रदान

स्वयं सकाश को पहल सम्मान, वनमाली स्मृति पुस्तकार, राजस्थान अकादमी पुस्तकार, विजिष्ट साहित्य कार सम्मान, भवभूति सम्मान, कथाकर्म सम्मान, सुभद्रा कुमारी योहान पुस्तकार जैसे प्रतिष्ठित सम्मानों से अलंकृत किया जा चुका है।

# स्मृति शेष

## गंगा प्रसाद विमल

|   |   |
|---|---|
| <b>निधन</b>   | <b>अवदान</b>  |
| गंगा प्रसाद विमल का जन्म ३ जून १९३९ में हुआ था और ४० वर्ष की अवधि काल के बाद २३ दिसंबर २०१७ को अड्डे के दूर्घटना में उनका निधन हुआ।   | हिन्दी साहित्य जगत में आ कहानी आंदोलन के अनकूल के रूप में जाने जाते हैं गंगा प्रसाद विमल कवि कथाकार उपन्यासकार के अनुवादक के रूप में जाने जाते हैं।                               |
| <b>पूजन</b>   | <b>पहचान</b>  |
| गंगा प्रसाद विमल ने ३ वर्षों के लिए कलौं के रूप में कार्य किया छोटीं दृश्यों से अधिक कविताओं का लिखी। गद्य का अनुवाद किया अंग्रेजी की पाँच फूलकों का अनुवाद हिन्दी में किया जिसमें काव्य तथा उपन्यास शामिल हैं। | गंगा प्रसाद विमल को दुनिया भर में अलग-अलग पुस्तकों की सम्मानित किया गया इनके द्वारा तमाम देशों में शोध पता पढ़े गए इनकी देशी-विदेशी संस्थानों एवं संस्थाओं की सदस्यता प्राप्त थी। |

# सम्पादकीय

सम्पादक की कलाम री

"-बिष्टक और साड़क  
 दीनों एक जैसी हीते हैं  
 खुद जहाँ है, वहाँ पर रहते हैं  
 गगर दूसरों को उनकी मंजिल  
 तक पहुँचा ही देते हैं।"

इन्हीं बैठक हैं चलेगूँ यंकितों तथा हमारी साह्यायिकाओं के  
 माफिसनि के नाश हा दीलतराग महाविद्यालय के हिन्दी  
 विगाग की प्रम्पनागत विरासत की आगे बढ़ते हुए हक्क  
 लिखित पत्रिका - 'मानसी' का 21 वाँ अंक स्वतुत करते हुए  
 अतान्त हर्ष एवं गर्व की अनुभूति कर रहे हैं, 'मानसी'  
 पत्रिका एक ऐसा अनूठा मंच है जहाँ हमारे विश्वाग की  
 द्वाताओं के जन के शावों और विचारों की आगे बढ़ने  
 और कुछ नया जड़ने व लिखने के लिए स्त्रीत्वाहित किया  
 जाता है, यहाँ अविष्या के नये स्वताकारों की सृजनशीलता,  
 विचारशीलता, कला कौशल व कल्यनाओं की स्वतात्मक प्रतिष्ठा  
 की अभिवाकृत हीने का अवसर मिलता है।

त्वाहिता की विभिन्न विद्याओं - कविता, कहानी, निबंध,  
 लेख हक्कादि की अपनी कलना की उड़ान देकर द्वाताओं ने  
 इस पत्रिका की संजीवा है, लेखन के चाश-साश रैमांकन  
 और चितकारी से 'गानसी' की शुराज्जित किया गया है,  
 द्वाताओं की लेखन-प्रतिष्ठा की अपने में जीड़ती हुई  
 यह झूँझला एक पत्रिका के जप में सामने आई है।

"आगी तो अक्षरी गंगिल गाना ताकी है  
 -आगी तो दक्षादी का लगितहान ताकी है,  
 -आगी तो तोली है गुट्ठी मर जगीन  
 -आगी तो तोलना आसान ताकी है।"

तालाना और यशार के अनूठे संयोग की दाताओं में इस पतिका की नया आयाश दिया है। जहाँ जीवन के सर्वे-मीठे अनुग्रह हैं, तहाँ जीवन की कटु चालता सी दक्षाई विद्यमान है। रागाज भी हीनी ताली घटनाओं, श्रीष्ट, वीरीजगरी, शुद्धगरी आदि अनेक निशाओं की उपनी चरनाओं में चशन दिया है।

"ऐ गौरी कलमा, बतना- रा अहसान कर दे...  
 कह न पाई जो बुनान तो गयान कर दे..."

बागाय के नाश बदलती परिविष्टियों में नित नई चुनौतियों का चाणना करना पड़ता है। कौरीना त्रैशिक महामारी के चलते बाग्युर्ण विश्व लोकडउन की मास की छील रहा है। किन्तु परिविष्टियाँ, शाले ही कितनी विपरीत और विकट क्यों न हीं, हम हिन्दी निशाश की दाताओं के दुलन्द हौसलों में अवधान नहीं डाल सकती क्योंकि-

"जत हौसला बना लिया कुँची उड़ान का,  
 फिर देखना फिजूल ठूँ, कद आसामान का"

‘गानकरी’ पतिका का स्काशन न स्वैके इसलिए हिन्दी साहिल्य परिषद पहली तर छरतलिष्टित पतिका की एसी. डी. एफ. (PDF) रूप में प्रकाशित करने जा रहा है। जब हालत सामान्य ही जाएंगी, तब परमारामत रूप सी सी पतिका का स्काशन किया जाएगा। हिन्दी निशाश की दाताओं का यह डिजिटल दौर में प्रशंग प्रकाशन है।

"हर दीटा - जा तदलात और प्रयत्न  
काम्यावी का राता दूँड़ लेता है।"

आशा है, मानसी का यह अनुठा गंग आगामी तर्फ़ में  
एवं इसी प्रकार दाताओं के लेपन की जैसी अक्षर स्थान  
करता रहेगा। हिन्दी साहिल परिषद की ओर से हग हिन्दी  
विभाग की जारी प्राद्यापिकाओं व प्राद्यापक, परिषद चाल्सी  
तथा प्रथम, द्वितीय व तृतीय तर्फ़ की जारी दाताओं का  
अग्रिमाद्य तरती है जिन्हीं मानसी पत्रिका के बाफल  
प्रकाशन में राजाजगत योगदान दिया और वही वीक्षक  
त पठनीय तराणा। जिस प्रकार दूँड़ - दूँड़ सी छड़ा भरता  
है उसी प्रकार अनेक उत्तर - चढ़ात एवं जारी के साह्योग  
के बाय 'गानकी' पत्रिका ने आपना बाफल पूर्ण किया।

"काम्यावी का बुद्धन हीना चाहिए,  
फिर गुरिकलों की क्या औकात?"

शुभकामनाओं नाहिं गानसी पत्रिका का 21 नं अंक आप  
जारी के सामग्र स्वतुत है, आप पाठक के स्वप में  
इस पत्रिका की जुड़ंगी ती हगारी यह दुनिया और  
विश्वत ही जाएगी - मानसी।

### काम्यादिका

वन्दना बुडाकीटी  
नाहिद श्रवील  
प्रियंका राय

कर्मसु

# वही आजादी...



वही आजादी

जहाँ शिशुओं की शिलाकारी न हो,  
जहाँ बच्चों की वैगरी न हो।  
संघर्षों की आजादी की जहाँ, ये वदनाम न किया जाए।  
राजनीति की शिर चढ़ा, औहा काग न किया जाए,  
खुफकुबी रा गौत का जरुर गुम्भरी आद्यात्र हो।  
उस जिले का जिलाधीश सीधी जिम्मेदार हो,  
भूजों के लिए नया कानून हो।  
सामर्थ्य में जनता का लुनून हो,  
जहाँ आत्महत्या की घिंता पर किसान न हो।  
निष्ठिया जैसे कांड न हो,  
जहाँ मानवता का पाठ हो।  
सम्प्रदायिक ढंगों का छाता हो।  
हाँ वही आजादी जहाँ गाली की उभित्यकित न हो।  
जाति-वर्ग तिरीप रो प्रीति न हो।  
जहाँ नीतिकता के आद्यात्र पर सामुचित तिकाश हो।

व्याख्या

ली.ए. हिन्दी (तिरीप)  
द्वितीय वर्ष

## स्त्री...

आज जैने पूढ़ा उभ दर्पण से,  
जो लगा है मेरे हार में  
ठीक स्थिकी के जागरे,  
जहो से दिखता है...  
मुझोंदार जगाज

मैंने पूढ़ा दर्पण से कि  
मैं कौन हूँ  
तभी उत्तानक मेरे ही अतिर से  
आई उआवाज  
तुग हो- 'स्त्री'

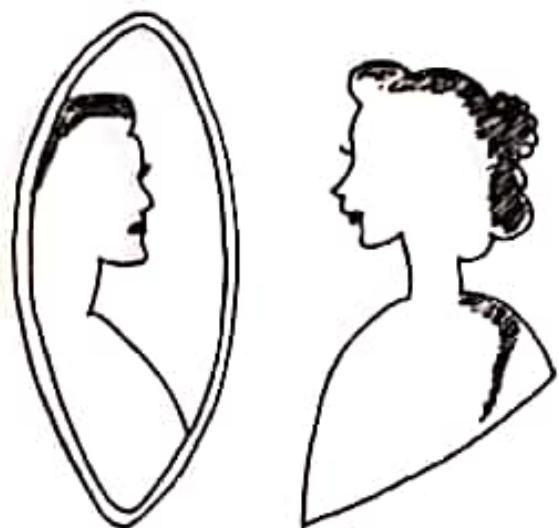
यह चुनते ही मैं हातरा गई  
मुझों याद आने लगा...  
जैने मुझोंदार जगाज  
उसी उसी जगाज के कुद दरिंदे लोग  
फितना कहिन है सुद की कल  
लीगों की नजरों से लगा पागा...

दुरुन होती है ऐसी जगाज जैं  
जहो पहले स्त्री के जाण दुर्विहार  
किए जाता है,  
फिर उसी जगाज के लोगों द्वारा  
स्त्री से ही मरण किए जाते हैं।

करा गर्वत शी  
आठ तजे के ताद हार रो  
पाहर जाने की ?

-फिर मुझे याद आया कि  
मैं हूँ  
एक 'सूरी' और दैखनी लगी  
दर्पण गैं खुद की।

-पिंकी  
श्री. ए. हिंदी (विषेध)  
प्रथम वर्ष



## स्त्री-व्यष्टि

जहाँ हर रोज़, हर दिन, हर घंटे और हर गिरावं  
दरिंदगी होती है।

जहाँ की लड़कियाँ और महिलाएँ चुद की असुरक्षित  
महसूस करती हैं।

जहाँ की हर सड़क उसी दिनहाँई  
घूसती है।

जहाँ गलत हीने पर उसी ही जिम्मेदार  
ठहराया जाता है।

जहाँ पितृसत्ता का  
वास है।

जहाँ हर सांसाहन व सांपत्ति पर फुर्रखी  
का ही आधिकार है।

जहाँ तसवरी की बात बस  
किताबों में होती है।

जहाँ जन्म से पहले ही उसी गर्भ में  
मार दिया जाता है।

जहाँ उसी घर की चारदीवारी तक  
सीमित बसा जाता है।

जहाँ भगव-बीगा का निर्धारण सिर्फ उसी के लिए  
किया जाता है।

जहाँ परम्पराओं की उसकी तैयिरों  
बनाया जाता है।

जहाँ उसकी खालिशीं का  
गला ढौंटा जाता हो।

जहाँ मानवता का  
आंत हो।

जहाँ रिक्तीं की सरदि  
न रही हो।

जहाँ विरोध करने पर उसी जिंदा  
जलाया जाता हो।

जहाँ समाजता की कौई  
हँद न हो।

जहाँ उसी चक्रां का गिरण लैने तक का  
आष्टिकार न हो।

जहाँ बिर्फ उसी ही सरदि जैं रहने की  
हिदायत दी जाती हो।

जहाँ 'ना' कहने पर उस पर एसिड  
फैंका जाता हो।

जहाँ उसी घर से अगता कर जिरा के हांझी गें  
द्वाकेला जाता हो।

जहाँ उसी दीयम दर्जे का नागरिक तक न  
जामाझा जाता हो।

उस देवा में जी की देवी - तुला कहना  
मजाक़ - सा लगता है।

— गनीषा

ली० ए० हिन्दी (विशेष)  
तृतीय वर्ष

## यादें...

हर लग्ना चुग - रा नन गया  
पापा आपकी याद मैं,  
आँख से आँसू रुक न पाए  
पापा आपकी याद मैं,  
सारा अहाँ सूना - सूना लगै  
अब यादें ही हैं यहाँ  
बसा एक झलक गुझी मिल जाए  
जब मैं चाहूँ, तब मिल जाए।

जीवन - भर कुद कठ न पाई  
आज कहूँ तो ये दिल भर आए  
दिल की ये आशाएँ...  
आप की बार - बार बुलाएँ  
जग की भीड़ मैं भी, मैं हूँ अकेली  
कोई किरण तुम्ह तक लै जाए  
आँख से आँसू रुक न पाए  
पापा आप बहुल याद आए।

मैरा ये सुर बना पहचान गई  
 साथ मैं रही एक प्रेषण। तेरी  
 कोई नगगा जत रो दिल चुनाए  
 पापा आप बहुत याद आए  
 जिंदगी मैं कष्टों को जत-जत छोला  
 पापा आपकी याद ने गुही है दोसा  
 दिल का गग जत आपकी याद दिलाए  
 आँख जी आँख रुक न पाए  
 पापा आप बहुत याद आए।

- गुलिमता चौधरी  
 बी. ए. हिन्दी (निश्चय)  
 दृतीय वर्ष



## जीने लगी हूँ...

उतना कुद दूरा है अंदर,  
और बाहर सब समेटने में लगी हूँ।  
पूरा का पूरा जैलाव उमड़ रहा है शतार,  
और आँखों से दलक जाए एकाथा आँखेंगों की  
पौटिनें में लगी हूँ।

जी चाहता है रीछ - चिल्लाकर रोना  
और मैं सिंशकियों के सहारे गुनगुनाने में लगी हूँ।  
वक्त इतनी तीजी से बदल रहा  
सब कुद रैत - रा फिराल रहा  
और मैं इस फिरालते रैत से घरेंदि बनाने में लगी हूँ।

समझ में नहीं आता क्यों,  
जितना सहेजती हूँ उतना ही विलरता है,  
अब पहले से भी ज्यादा विलर चुके की,  
फिर से सहेजने में लगी हूँ।

खड़ी दैर हौं गरी दुनिया का दस्तूर समझने में कि -  
सभी अपने हैं आपकी सुरी में,  
फर्क नहीं पड़ता किसी की आपके गम से,  
और मैं सबको अपनी गग मरी कहानी  
चुनाने में लगी हूँ।

पता चला है अब कि जीना है तो  
ज्ञानुओं से निष्ठी

वरना सूरज की ढलना पड़ता है,  
 चांद्रोदय के लिए।  
 सही, समझौ और झीलने के बाद  
 जीनै का नया तरीका समझौ में लगी है।  
 अनुकूल हो, प्रतिकूल हो - अब हर परिस्थितियों में  
 जीनै लगी हूँ।  
 हाँ! मैं जीनै लगी हूँ।

— रमेश सिंह  
 श्री. ए. हिन्दी (विशेष)  
 प्रथम पर्ष



## ऐसी ही हूँ मैं...

पल मैं रौ जाती हूँ,

पल मैं हँसा जाती हूँ,

पल मैं गिलाक्ष, चुप हो जाती हूँ  
मैं ऐसी ही हूँ...

नहीं बकते आँख गुजासै,

इस से दुरा गान जाती हूँ...

आंदर घुटकर बाहर से हँसना मुश्किल जा पाती हूँ...  
हाँ मैं ऐसी ही हूँ...

सबसे हीरी अपने घर मैं हूँ,

पर अब हीरी नहीं हूँ...

माँ की परेशानियाँ और भाई की टैंकान सब नामह पाती हूँ...  
हाँ अब शौडी बड़ी मैं शी हूँ...

दिनभर बौलती रहती हूँ,

चहचहाती रहती हूँ...

पर जब कोई पूढ़े कि पिता और बैटी का रिश्ता  
कैसा होता है ?

बस ! चुप हो जाती हूँ...

माँ ने पिता की कमी कभी गहरास न हीने दी,

पर फिर शी बस चुप हो जाती हूँ...

अब ऐसी हो हूँ मैं...

— प्रिया

बी० ए० हिंदी (विदेश)

गृष्णग वर्ष

## मेरा कसूर

दैयता शा तो गुह्या,  
हेडता शा तो गुह्या,  
हर गली, हर चौराहे पर  
रोकता शा वो गुह्या !

क्या करूँ, किसरी कहूँ ?  
ये सौनाती शो रोज मैं,  
त्या करूँ, त्या न करूँ ?  
ये सौच, हर बक्त उस्ती थी मैं !

विरोध जब उसका किया  
जला दिया चैहरा मेरा  
क्षायद समझ भी न सकी,  
त्या शा कसूर गैरा ?  
बस इतनी-सी बात पर  
जला दिया चैहरा गैरा !

कौन है मेरा दुरमन ?  
कोई तो बताओ !  
मेरी जलानी, मेरा हुस्न या  
मेरा घूर !

किसी दोष द्वृँ अपनी बबंदी का ?  
सब कुद सत्ता हो गया फल भर मैं



हँसती खेलती गिन्दगी एही मेरी  
गम ही गग भर दिल मेरे जीवन में।

उठ खड़ी हुई हूँ किर शै  
आपनी पहचान लिए  
दूनी कैवल मेरा चैहरा बदला है  
मेरा बगूद तू न मिटा सका!

मेरी उब यही दुआ है  
आगले गंगा, मैं उसकी हीटी धनुं  
आँख तुम जैसा भया आशिक  
फिर मिले मुझे!

— शितानी

बी. ए. हिन्दी (विजौघ)  
तृतीय वर्ष

## हर वजह...

लोग जीने के लिए तया-करा ढूँढते हैं?  
 मैं दूसरों के लिए जीने की हर वजह ढूँढती हूँ।  
 लोगों से किस तरह जी गिर्लूँ, वौ हर वजह ढूँढती हूँ,  
 लोग आपने लिए आपनों को शूल जाते हैं...  
 मैं लोगों को अपना बनाने की वजह ढूँढती हूँ।  
 खामोश हो जाते हैं लोग आपनी जान्याई पर...  
 मैं सब को जानने की हर वजह ढूँढती हूँ।  
 शूल जाते हैं लोग आपने माता-पिता जी की...  
 मैं उनके लिए स्वर्ग से भी सुन्दर  
 बनाने की जगह ढूँढती हूँ।  
 रोते हैं, बिलयते हैं चन्द सिक्कों के लिए,  
 मैं लोगों के रोने की हर वजह ढूँढती हूँ।  
 दिल तोड़कर यूँ ही, चले जाते हैं लोग आपनी का  
 मैं अपनों का दिल जीतने की हर वजह ढूँढती हूँ।  
 न जाने क्यों लोग आपने लिए जीते हैं,  
 मैं दूसरों के लिए जीने की वजह ढूँढती हूँ।  
 पल में ही दूर हो जाते हैं आपने न जाने क्यों?  
 मैं लोगों के करीब और दिल के करीब  
 आने की वजह ढूँढती हूँ।  
 यह मेरी जिन्दगी का मकान है मेरे दैस्त!  
 इशालिए इसी पाने की हर वजह ढूँढती हूँ,  
 हर वजह ढूँढती हूँ।

— साधाना देवी  
 वी. ए. हिन्दी (विशेष)  
 प्रथम वर्ष

## हिन्दी जवान

तुम गत डरना इन अंग्रेजी के बाबुओं से,  
वो डराएँगे, लजित करेंगे।

पर तुम मत डगमगाना,  
इस हगले का तुम मुँह तोड़ जबात देना।

तुम स्तर्यां में चिरंगीती, अमृतदीर हो!

तुम हिन्दी हो परन्तु उसकी पहली गास्तीय।  
तुम मत डरना इन अंग्रेजी के बाबुओं से,

वो शिक्षित नहीं, बुहिन।

तो जल्लर हैं, मूर्ख!

तुम हिन्दी के महात्मा, वे अंग्रेजी के बाबू।  
तो खड़े रहना, अपनी भाषा गैं,

वे निवल, तुम साहसी।

तुम मत डरना इन अंग्रेजी के बाबुओं से,  
वे काला कोट पहने होंगे, हग द्वेष वनश्वारी!  
मुछ पर वे लिठ होंगे जुगाली, हम तिलकश्वारी!  
तो रामोहित करेंगे, पर हग दी तरफा होंगे;  
पर उसकी पहली गास्तीयताधारी!

तुम मत डरना इन अंग्रेजी के बाबुओं से ॥

— अमितका

वी. ए. हिन्दी (विरोप)  
द्वितीय वर्ष

## जिन्दगी की घूप-हाँव...

कभी घूप , तो कभी हाँव है जिन्दगी...

विद्याता ने जो दिया , तो अद्युत उपहार है जिन्दगी  
कुदरत ने जो द्वारती पर बिखेरा , तो एस है जिन्दगी

जिसी हर रोज नये राबक गिलते हैं

यथार्थों का अनुशव्व करने वाली कड़ी है जिन्दगी  
जिसी कोई न समझ सके , ऐसी पहली है जिन्दगी  
कभी मुश्किलों में हांसी सहली है जिन्दगी

कभी सपनों की भीड़ , तो कभी अकेली है जिन्दगी

जो समय के साथ बदलती रहे , तो संस्कृति है जिन्दगी

खट्टी - मीठी यादों की स्मृति है जिन्दगी

आपने - आपने कर्गों का फल है जिन्दगी

कोई न जानकर भी जान लैता है सबकुद

ऐसी है जिन्दगी

तो किसी के लिए उलझी हुई पहली है जिन्दगी

जो पल - पल चलती रहे , ऐसी ही है जिन्दगी

कोई हर परिस्थिति में रो - रोकर गुजारता है जिन्दगी

तो किसी के लिए गम में श्री मुस्कुराने का हौसला है  
जिन्दगी

कभी उगता चूरज , तो कभी ऊँझेरी निशा है जिन्दगी

ईश्वर का दिया , माँ जी मिला अनगील उपहार है जिन्दगी

तौ तुम यूँ ही न बिताओ अपनी ज़िन्दगी  
दूसरी जी हटकर तुम बनाओ अपनी ज़िन्दगी  
दुनिया के लोर में न छो जाए ये ज़िन्दगी  
ज़िन्दगी शी तुहाँ दैखकर मुकुराएँ,  
तुम ऐसी बनाओ ज़िन्दगी ।

—पलक

बी. ए. हिन्दी (विशेष)  
प्रथम वर्ष



## उम्मीदों का सागर ...

सूरज की पहली किरण और निडियों की आवाज़,  
हर रोज एक नई कहानी गढ़ती है।  
अद्भुत सवालों का जवाब लिए,  
हर दिन सूरज उगता है।  
व्यापोंकि हर चुबह,  
उम्मीदों का सागर अपनी आँखे सौलता है।

कल की अद्भुती ताते,  
आज की नई कहानी है।  
लीते पल में सीधी हुई बाते,  
आज एक नए अद्यायों की जननी है।  
गुस्सीबोटों में भी आशाओं की मुस्कान,  
अपना दम नहीं तौड़ती।  
व्यापोंकि हर चुबह,  
उम्मीदों का सागर अपनी आँखे सौलता है।

महंगाई कम होगी की आशा लिए,  
आम आदमी हर रात, एक नई चुबह का  
इंतजार करता है।  
कब मैं सुरक्षित रहूँगी का चापना लिए,  
हर लड़की नई चुबह का इंतजार करती है,  
मुझे मेरा हक भिलेगा सीधाकर,  
हर गरीब पूरी रात,  
त्याकुल रहता है।

कर्योंकि हर सुबह,  
उम्रीदीं का सागर अपनी आँखे सौलता है।

अपना तक्त आएगा कठकर बाकित  
हर रीज,

नयी दिशा में कदम बढ़ाता है।

सुविहाओं की सूखी घटेगी का तिष्ठतास,  
तैजानिकीं की प्रयासरत बनाता है।

कर्योंकि हर सुबह,  
उम्रीदीं का सागर अपनी आँखें सौलता है।

—निवेदिता

ती. ए. हिन्दी (किशोण)

तृतीय वर्ष

## सृती...

मुट्ठी में कुद सपने लैकर, भार कर जीवों में आशाएँ  
दिल में हैं अरगान यही, कुद कर जाए।

सूरज - सा तैज नहीं मुझमें

दीपक - सा जलता दैखोगे।

अपनी हृद रीवान करने ची,

तुग मुझकी कव तक रोकीगे ?

मैं उस माटी का बृक्ष नहीं, जिशकी नदियों ने छोड़ा है।

बंजर गाटी में पलकर, मैंने मृत्यु से जीवन छींचा है।

मैं पत्थर पर लिमी इवारता हूँ,

इश्वी रो कव तक तौड़ीगे ?

गिट्ठी वाला मैं नाम नहीं,

तुग मुझकी कव तक रोकीगे ?

इस जग में जितने जुल्म नहीं, उतनी साहने की ताकत है।

तानों के भी झीर मैं रहकर, सर कहने की आदत है।

मैं सागर से भी गहरी हूँ,

तुग कितने कंकड़ फैकोगे ?

चुन - चुन कर आगे बढ़ौंगी मैं

तुग मुझकी कव तक बीकोगे ?

— सुशा गुप्ता

बी. ए. हिन्दी (विशेष)

प्रथम वर्ष

# मंजर...

पल - पल साँस आकती है  
 दिल रोता है, काया तड़पती है,  
 शूमा पैट कुद कहना चाहता है -  
 कान चुनते नहीं।  
 दिल्ली मंजर मूल राकती नहीं  
 हर तरफ है ग्रय का गाहौल द्वाया।  
 पापा के माथी पर चिंता का मातम द्वाया।  
 माँ की आँखों में आसुओं का सामुद्र है द्वाया।  
 दिल्ली हिंसा में बाला लालची ने तहलका है गचाया।  
 पापा दिपाना चाहते हैं कहीं दूर-हग घब्बों को।  
 पर कहाँ ?  
 कौद्धि सुरक्षित जगह गिलती नहीं।  
 ग्रय के गाहौल में पापा दिपाए कौसी ?  
 दिल्ली मंजर मूल जाए कौन ?  
 अपना घर पराया ही गया कुद ही पलों में,  
 इस पर यकीन करें कौसी ?  
 तै हैवान थे ?  
 वै जानवर थे ?  
 या री वै इंसान ?  
 कौन थे तै,  
 जिन्हीने सबके घर उड़ा दिए ?

हैवानों के नापाक इरादों ने  
किसी के सपने,  
किसी का भविष्य,  
किसी की आकृष्टा<sup>१</sup>,  
किसी के पापा, किसी के भाई  
किसी का बेटा, किसी का दैत्य  
जला दिया।

दिल्ली मंगर ने हर जिंदादिल झँसान  
का दिल जला दिया।

मुस्कान  
ली. ए. हिन्दी (विशेष)  
तृतीय वर्ष

## सप्ने

आज मेरे विचारों ने अपने पंख फैलाये हैं।  
 समाज की दी जास्ती चुनौतियों को, मैंने पूर्ण कर दिखलाये हैं।  
 आगे बढ़ने की इच्छा दौड़ गई, मैंने भी दौड़ लगायी हैं।  
 किर व्यांग्यों तुमने मुझ पर, अब भी, इतने पाबंद लगाये हैं?  
 गहरी खाई से निकलकर, मैं आज यहाँ तक आयी हूँ।  
 कुछ कर दिखलाने का सपना, अपनी इन आँखों में लायी हूँ।  
 किर क्यूँ फौड़ दी जाती है वै आँखें  
 जिनसी दैखा करते हैं ठम सपने।  
 कुछ चंद सवाल, मैं अपने मन में लायी हूँ।  
 बतलाये कोई मुझे यहाँ पर बैठा।  
 सपने दैखकर मैं कौन-सा गुबाह कर आयी हूँ?  
  
 क्या अब भी किसी पुरुष समाज में निकल,  
 अपना पश्चात लक्ष्यायेगा?  
 हाँ, मानती हूँ मैं।  
 अगर गयी लड़कियाँ उससी आगे, तो वह यह कर नहीं  
 सह पायेगा।  
 कतरने की हुगरे पंख, वह किर जो आगे आयेगा।  
 लड़ सकती हूँ गैं खुद अपनी लड़ाई, यह मैं उनकी दिखलाऊंगी  
 नहीं झुकूँगी, नहीं रुकूँगी, अब वस आगे बढ़ते जाऊँगी।

अनू अग्रहरि  
 बी.ए. हिन्दी (विशेष)  
 द्वितीय वर्ष

# कन्या मूरुण हत्या

एक दैती का चागज की संदेश...

अगर मेरी मूरुण हत्या नहीं होती तो,  
मैं भी नहीं परी होती।

मैं नहीं परी होती, दृष्टिं पर चलती होती,  
चंचल मन, कौगल तन और,  
उमंगी से भरा मेरा हृदयात्म होता,  
आज मैं मूरुण की न सौचकर,  
वर्तमान की दैती, भ्रातिरथ मैं चलती,  
मैं नहीं परी जीवन के काल मैं चलती,  
अगर मेरी मूरुण हत्या नहीं होती ॥

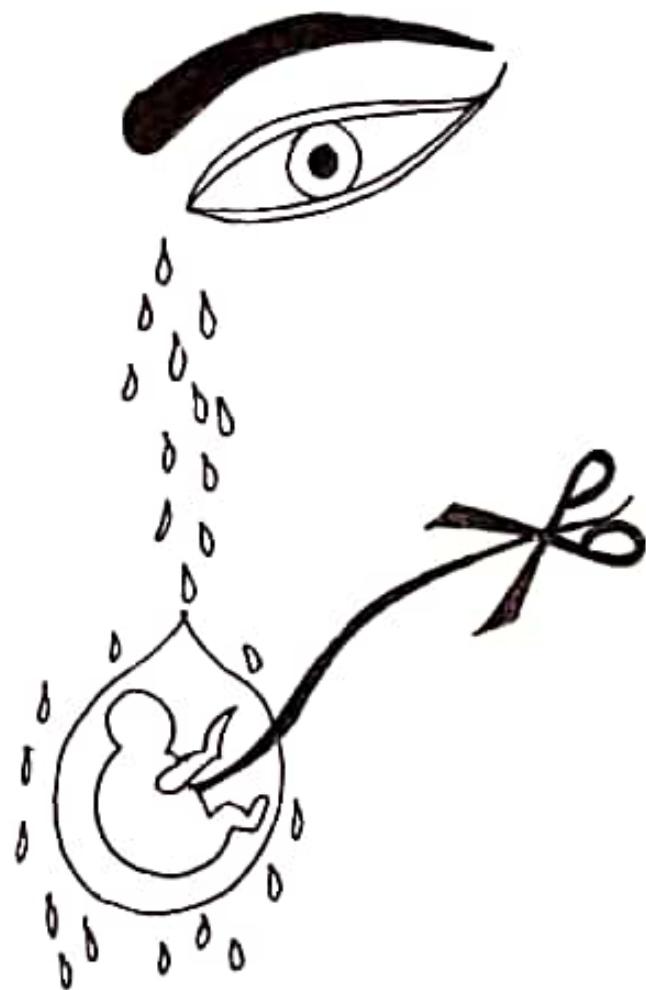
निशाशा की बीच आशा की दूँढ़ती,  
अनन्त नभ-तल की रीमाओं की दूँढ़ती,  
अनगिनत विन-विन मर्तों के चापैदा,  
मैं चलती दुनिया के अन्तर्गत मैं,  
कल्पनाओं की गंभीरता, चापनों का चागर दूँढ़ती  
मैं भी चलती, मैं प्री चलती ...  
अगर मेरी मूरुण हत्या नहीं होती ॥

प्रतीक आवा की चाय लैकर,  
निशाशाओं से नाता तौड़कर,  
हृदय मैं चंचल कामनाओं के चाष,  
उमगीद की किञ्चन की दृति मैं,

मैं भी जीती, मैं भी जीती...  
अगर मेरी छूट हत्या न होती॥

दिव्या

ली. ए. हिन्दी (विजेय)  
प्रथम वर्ष



# ऐ जिन्दगी...

ऐ जिन्दगी ! दूने, बहुत कुद सिखा दिया,  
लिन सोलै , तिन गाँगे, बहुत कुद ढिला दिया।  
दुष्प्र में खुशा होना, तकलीफ में आँखुओं को दिपाना सिखा दिया  
ऐ जिन्दगी ! दूने, बहुत कुद सिखा दिया।

उम्र के पहले बतपना खीना सिखा दिया,  
लौगीं के बागने फैक व्हाइल कलना सिखा दिया,  
ऐ जिन्दगी ! दूने, बहुत कुद सिखा दिया,

कुद अपने भी पराए हो गए,  
लैकिन कुद पराए ठोकर भी अपने रो लाने लगे।  
कुद अपनीं ने आही राह पर राश ढोड दिया,  
आँर कुद 'परायी' ने वहीं हाण छाग लिया।  
ऐ जिन्दगी ! दूने, सच में बहुत कुद सिखा दिया।

—दीपाली—  
बी.ए. हिन्दी (विशेष)  
—हितीष वर्ष

# हाँ किन्नर हूँ मैं

ईश्वर की बनायी रक शारभीयत हूँ मैं

सबसे अलग सबसे जुदा लेकिन शक्ति रक  
अहमियत हूँ मैं

हाँ किन्नर हूँ मैं

ज्ञान मैं इच्छत नहीं हूँ मैरी, लोग मुझे देना  
हंसा करते हैं

लेकिन किसी भी उन्हीं लोगों से चेहरे मांग कर अपना  
पैट भजती हूँ मैं

हाँ किन्नर हूँ मैं

कभी नुड़कों पर तो कभी ट्रैनों मैं

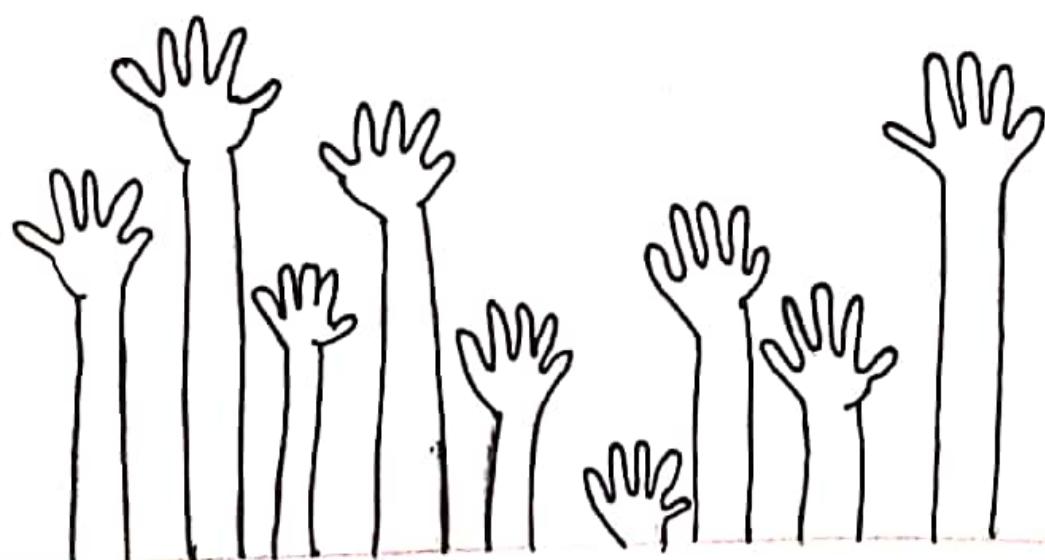
तालियाँ लजाते हुए मिल जाती हूँ मैं, इसलिए  
नहीं कि वह मेरा घर है बाल्कि इसलिए मेरा कोई  
घर ही नहीं

हाँ किन्नर हूँ मैं

किसी के घर नुशियाँ आने वाली हों तो सबसे  
पहले जान जाती हूँ मैं

विन बुलाए ही अमैके घर आवश्य देने पहुंच जाती हैं  
मैं  
हाँ किनारे हूँ मैं

नाहिद प्रवीण  
वी०३० हिन्दी (विशेष)  
तृतीय वर्ष



ମିଳା

# कौरीना, लॉकडाउन और बदलती जीवन शैली

कहते हैं पाँव उतनी ही पसारने चाहिए जितनी हमारी चादर नी हो। उसी स्कार 'तिकास' और 'आधुनिकता' भी उतनी ही हासिल करनी चाहिए जितनी करनी से हमारे अहितत पर कोई सत्ता न हो, और इसके लिए नियमों का पालन करना आवश्यक है; जैसे - नियंत्रण, अनुबासन, सतत पौष्टि आदि।

विश्व के सभी देश आज 'कौरीना' नाम के संकट का सामना कर रहे हैं। यह कहीं-न-कहीं अन्धाधुंध विकास की दौड़ में मानव सम्मति को खतरे में डालने जैसा कार्य हो गया है।

कौरीना का उद्गम चीन के बुहान बाहर से माना गया है जिसके बाद यह विश्व के अन्य बाष्टीं तक पहुँचा और जीवन का बाबू बना। किन्तु ऐसा क्यों कि एक देश की महागारी विश्व की लौ इन बही है? यह 'तीव्रीकरण' के परिणाम स्वरूप हुआ है, क्योंकि आज मानव इतना विकसित हो चुका है कि विश्व के किसी भी कोने की कोई भी हलचल सागृते विश्व की स्थानित करती है, यह कौरीना भी इतका एक उदाहरण है। इसके कठोर का मूल्यकोष चीन के पश्चात अग्रिका, इटली, यूरोप के अन्य देश तथा भारत भाइत मूल रूप से रहा है।

सबसी आकृत्याचिकिता और उचित करनी वाली बात तो  
यह है कि जी देश विकास होने का दावा करते  
हैं, अब तक इस महामारी का हल नहीं खोज पाए हैं।  
और पूरा विषय लोगों की दम तोड़ने हुए देखने की सजूल  
है, किन्तु कुछ लोग अपनी रोगप्रतिशीघ्रता सामता तथा डॉक्टरों  
के स्थान से बदल सकते गए भी सफल हुए हैं।

इसके फैलाव की रौकने के लिए सभी के पास केवल एक  
ही उपाय था और वह था - 'लॉकडाउन', इसका मतलब  
दुनिया भर के देशों के सभी क्रियाकलाप पूर्णिः बन्द।  
कौन कह सकता था कि कामाने, फैक्ट्री, उष्टीग, रेलगाड़ी,  
हवाई जहाज बनकर जायेंगे। मैं तो कभी कल्पना भी नहीं  
कर सकती थी किन्तु यह बात प्रतिशत भला है। लॉकडाउन  
मैं सभी क्रियाएं बन्द हुई हैं जिससे संक्रमण की रोकने  
मैं सफलता भी मिली है।

शाहत मैं कीरीना इट्टी री आए सैलानियों द्वारा आगरा  
में देखने की मिला और उसके बाद कई कैसर सामने  
आए। इससी संक्रमण के उत्तरे की आँपते हुए सरकार  
द्वारा उन लोगों की कतारनटिन कर दिया गया जी संदिग्ध  
री, दिल्ली तथा अन्य शहरों में पहुँचने पर शाहत सरकार  
ने भी लॉकडाउन की घोषणा की। सतानगंती भी नरेन्द्र  
मोदी जी द्वारा लोगों को पुलिसाकर्मियों, बालशियर्स और  
डॉक्टरों तथा नर्सों की हाईसला-अफगाई के लिए ताली,  
घाली, दाढ़ी, गोबाइल टार्फ आदि जैरी कार्यक्रम करने  
की कहा गया जिसमें लोगों ने बढ़-चढ़कार हिस्सा  
लिया।

बाद में गीड़िया छारा कुद सतीं सामने आई; जैसे अगेस्तिका  
में लौगीं छारा लॉकडाउन का तिरीहा, भारत में समुदाय  
विशेष के लौगीं छारा अंधविश्वास के कारण भारत की  
अपील का उल्लंघन, दिल्ली के गुरुगंगती न्हीं अविन्द कैजरी  
वाल जी तथा डॉक्टरों की प्लाज्मा थेरेपी छारा कोरोना का  
उपचार और थोड़ी बहुत कामयाती आदि। ऐसी घटनाओं  
से खतरी ने मनोरंजन, दुखी, खुशी के लिए कार्य  
किया, किन्तु लॉकडाउन का सबसे बड़ा प्रभाव लौगीं की  
जीवनशैली में तथा पृथक्की के बातावरण, जलवायु, पर्यावरण  
पर दैष्टी की मिला। इससे लड़ने के लिए सभी देशों  
ने ठार न मिलाकर, हाथ जोड़ना शुरू किया (मार्तीय  
नमस्ते), साफ-साफाई तथा स्वच्छता का पालन किया, लॉक  
डाउन का पालन किया।

सभी लौग द्वार पर खाना बनाना, चायाग, चूत्य, गाने,  
अध्ययन, टीवी, गीवाइल आदि में रामय बातीत कर रहे हैं,  
कुद लौग अब भी समय बहादि फ़क़ रहे हैं, कहते हैं  
न कुरी आदतें कष्टी नहीं जाती, किन्तु भाकाशताक पठलू  
यह है कि जी लौग समय की बक्तता के कारण  
द्वार पर या परिवार के साथ समय नहीं बिता पाती  
ही, अब वे बिता पा रहे हैं,

अब बातावरण की बात तक है, लॉकडाउन के बाद  
तो द्वारती गानी जी उठी है। आपने पुराने बचपन  
के दिनों के जैसे साफ नदियाँ, साफ हवा, नीला आकाश  
पक्षियों का कलरत, कीट-पतंगों का फिर जौ दिखना,

जानवरों की बतलाता का महसूस होना आदि शाश्वी पुष्टी के लिए जीवन-धूटी का कार्य कर रहे हैं। किन्तु ऐसा कष तक चलेगा जबाब ! यह जाणी जानते हैं। बॉलीवुड के सीनियरिंग ने जो गाना बनाया है न कोरोना के लिए। 'फिर सौ मुस्कुराएगा इंडिया, इक दिन फिर सब बाहर जाएँगे।' दरअसल वे कितने रवाणी हैं, क्षेत्र आपनी चिन्ता करते हैं। उन्हें यह गाना बनाना चाहिए था—'पहली फिर की दिप जाएँगी, नदियाँ फिर की गंडी ही जाएँगी, आशमान फिर सौ धुँगा ही जाएगा, हवा फिर की स्फुरित होगी, हम (मानव) फिर सौ अन्धाधृत दीड मचायेंगे 'विकास की'।' आपको क्या लगता है ? मैं मैशानों की तात कर रही हूँ; नहीं जनाव ! मैं भल विकास की ऊँटी दीड सौ ही हूँ।

खैर हमें यह प्राणियों करनी चाहिए कि इस मरणकर महामारी से जाणी जल्द-सी-जल्द मुक्त हों तथा इस बाहर बर्यां पर नियंत्रण, अनुशासन तथा बातत पौष्टीय विकास के महत्व की समझकर जीवन जिए तथा विकास करें।

अन्तिम  
 दी. ए. हिन्दी (विशेष)  
 हिंदी वर्ष

## आधुनिक संस्कृति की नए संदर्भ में परिभ्राषित करता “सोशल मीडिया”

विश्व भर में “सोशल मीडिया” के द्वारा एक मंच सर्वके समझ आया जो सत्येक व्याक्ति के घर-घर पहुँचा। ‘सोशल मीडिया’ इंटरनेट के माध्यम से फोन, कम्प्यूटर, लैपटॉप आदि संसाधनों के द्वारा फैसलुक, फैसलैट (Facebook), ट्वीटर आदि जैसे सोशल मीडिया के मंच से लोग बुड़े, आधुनिक सांस्कृतिक पुनर्जागरण (रेसां) के बाद के समय से अब तक मानते हैं। आधुनिकता दो भागों में विभक्त की जा सकती है। पूर्वम वह संस्कृति जो एक सीमित हील तक ही सीमित थी पर सोशल मीडिया के प्रचार होने के कारण विश्व भर में समिह हुई। दूसरी वह संस्कृति जिसमें नागरिकों को खागड़करने के लिए या अपना विचार व्यक्त करने की व्यतीलता एक मंच के माध्यम से मिलना।

हम अगर भाजत की बात करें तो भाजत में कई भाषिक व धार्मिक, सांस्कृतिक के लोग रहते हैं। कई सांस्कृतिक, रीति-विवाह या तो लुप्त हो गए हैं या हाशिर पर आ गए हैं। परन्तु सोशल मीडिया के जाने के बाद हम परिवर्तन पाते हैं कि किस तरह लोगों में

साचीन सभ्यता भाँकृति के स्तरि जागरूकता बढ़ी है। जैसे भारत में पञ्चाली के साथ-साथ कई आदिवासी भाषाएँ हैं, पर समय के साथ कुछ भाषाएँ लुप्त हो गईं। परन्तु भाषाओं के आनंदित्व को बचाने के लिए उस भाषा को बोलने वालों ने अपनी आवाज सोशल मीडिया के माध्यम से विश्व के समझ लाई।

भारत में केसे कई भाँकृतिक रीति-रिवाज हैं, जिसमें लोग अपरिचित थे, म्यांकिं कुछ भ्रमूछ वर्गों का आधिपत्य आधिक था। वह अपने ही भाँकृतिक क्रियाकलापों का सचार समार करते थे। जैसे- पंजाबी, हरियाणवी, आदि पर अल्पसंख्यकों के भाँकृतिक क्रियाकलापों का आनंदित्व धुंधला रहा था अपनी आनंदित्व बनाए रखने के लिए उन्हींने सोशल माइट्रीस का सहारा लिया।

यदि हम हेतु तो पांगे कि सोशल मीडिया के माध्यम से लोग अपने विचारों को तत्काल ही व्यक्त कर देते हैं। जहाँ पहले विचार स्कर्ट करने की विरोधता नहीं थी वहाँ भी अल्पसंख्यकों का एकाधिकार था।

सोशल मीडिया आधुनिक समय का सबसे लोकप्रिय संच है जहाँ व्यक्ति अपने विचार अपनी कला का सचार करता है। भानकारी के उत्तम क्रांति का एक कृप सोशल मीडिया है। जन-जन से खुड़ा माध्यम 'सोशल मीडिया'



## SOCIAL MEDIA

①



किसी आम आदमी को हैंड या बिल्ब के किसी भी कौन से मैं बैठे व्यक्ति या हैंड से कृत्य करवाता है। सोशल मीडिया के माध्यम से ही भारत में बैठे व्यक्ति पार्श्चिम सभ्यता, संस्कृति को सलता से जान पाया है। यदि किसी व्यक्ति को किसी सार्वजनिक प्रैशानी है, या वह किसी सरकार के नियमों से असंतुष्ट है, वह अपनी नाराजगी स्कट कर देता है। उसे अगर कुछ सही लगती वह उसका समर्थन व समाज भी करता है।

आधुनिक समय में पुरानी सभ्यता संस्कृति से वह पीढ़ी जो उस प्राचीन विवाह से दूर से उसे जोड़ने की कड़ी का काम भी शाल मीडिया कर रहा है। उसे पुरानी संस्कृति को नई पीढ़ी के सामने लाते हुए उसको वर्तमान समय व परिस्थिति के अनुसार नए अंदर्भूत में परिस्थिति के अनुसार परिभाषित करता है। वर्तमान समय में सबसे दूसरी मंच बनकर उभरा है - "सोशल मीडिया"

वंदना बुड्डाकोटी

वी०५० हिन्दी (विशेष)

तृतीय वर्ष

ଶ୍ରୀ

# आधुनिकता

‘आधुनिक’— इस शब्द में बड़ा विचित्र आकर्षण है। आधुनिक कपड़े, आधुनिक जीवन जैली, आधुनिक व्यानपान अर्थात् आधुनिकता के विविध आयाम तो जीवन में कैसे एच-एस हैं कि उनकी किसी व्याकृत्या की जैसा हम सौच भी नहीं सकते। वर्तमान युग को उत्तर आधुनिक युग की संज्ञा दी गई है और उत्तर आधुनिकता के इस हीर में अति आधुनिक लोग आधुनिक दिवाने की हौड़ में प्रतिदिन आधुनिकता को भी पीढ़े हौड़ते जा रहे हैं किन्तु सवाल फिर भी बढ़ी है— क्या है यह ‘आधुनिकता’?

यदि दुनिया भर के सभी ही विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं को हौड़कर केवल उनका सार ग्रहण किया जाए (चूंकि आधुनिक युग में समय लचाने की दृष्टि से विस्तृत विवेचन से अधिक महत्वपूर्ण विवेचन का निष्कर्ष हो गया है) तो यह ज्ञात होता है कि आधुनिकता का जीवा-सम्बन्ध वर्तमान में घल रही तीतियों-नीतियों और घटनाओं से है। इस सकार आधुनिकता की जड़े-

तात्कालिकता की जगीन से जुड़ी हुई है, जो तत्कालीन है, कर्मान में संचालित है, वही आधुनिक है और जो तात्कालिकता से प्रेरित आचार- व्यवहार और जीवन जोली है, वही आधुनिकता है।

आधुनिकता विविध रूपों में, विविध सकार से स्वयं को आधीर्यकर करती है किन्तु उसकी सबसे मशक्त आधीर्याकरि मनुष्य के अन्तर्गतम से होती है, उसके भावों और विचारों से होती है। ऐसे विचार स्वयं भाव आधुनिक नहीं है, सम-सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप नहीं है, वे कर्तव्य आधुनिक नहीं कहे जा सकते हैं। अलंकृती किसी भी आधुनिक दिव्यने वाले व्यक्ति के हों। इससे यह भी सिद्ध होता है कि आधुनिक दिव्यने और आधुनिक होने में बहुत बड़ा अंतर है उतना ही (जितना सोने जैसी चमक होने तथा सोना होने में है) (पाठ्य क्रम अलिंगी-विक्रिया पूर्ण तुलना के लिए मुझे क्षमा करें किंतु इस क्षण मुझे इस परम्परागत तुलना के उदाहरण से बैहतर कोई आधुनिक उदाहरण तुलना के लिए न मिला)। आधुनिक दिव्यने के लिए कमर करने के सिद्धान में उत्तरना पड़ता है। वहाँ और केश व्यष्टि से परे जाकर अन्तर्गत में आधुनिक भाव- बोध-अथवा एक ऐसी भाव- बोध को उत्पन्न करना पड़ता है जिसका आधार सम-सामाजिकता है। यह सक्रिया मूलने में सरल हो सकती है किन्तु है अत्यन्त खटिल क्योंकि व्यक्ति

लिए मन में पहले से ही जैसे - जमार विचारों का स्थान बदलकर  
नन आधुनिक विचारों को स्थान देना पड़ता है। आधुनिक  
वर्णन की इस प्रक्रिया में आधी ही सफलता प्राप्त कर पाने  
वालों की 'अस्थिति बड़ी विधिलटी भाती है' 'लिङ्गकु' जैसी या  
यूँ कहे कि मन्द मंडारी की कहानी 'लिङ्गकु' की मुख्य पाल  
तनु की ममी जैसी। और तब लगता है कि आधुनिकता भवगुच्छ  
ही टेढ़ी रबीर का नाम है। यदि यही अर्थ में हेतु जारी तो

अन्ध कुमारी

वी॰रा॰ हिंदी (विशेष)

द्वितीय वर्ष

आशुभाषण प्रतियोगिता - तृतीय  
पुरस्कार

# ज्ञानार्जन के लिए पढ़ें

आज हमारे सामने अध्ययन संबंधी कुक बहुत ही महत्वपूर्ण समस्या है कि हम अपने भीवन में खल्द से खल्द से सफलता पाने की चाह में माल उतना ही पढ़ना चाहते हैं, जिससे हमारी कार्यसिफ्ट हो जाये अर्थात् हम परीक्षामूलक अथवा तथ्यगत पढ़ना चाहते हैं हम किसी विषय को विकास से नहीं जानना चाहते।

हमारा उद्देश्य ज्ञानार्जन की अपेक्षा परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त करना हो गया है। जिससे न केवल हम बढ़ जाते जा रहे हैं बल्कि हमारे पढ़ने की आदत में भी परिवर्तन आया है।

परीक्षामूलक अथवा अंक प्राप्ति के लिए पढ़ने की हमारी यह आदत हमें नृष्टम् व दूरदृश्म् बनने से भी गोकर्ती है क्योंकि हम उतना पढ़ते हैं जितना परीक्षा हेतु उपयोगी होता है और इस कारण हम विषय पर ध्यापि चिंतन नहीं करते। कई बार तो हम हमारे गान्तिक में उठ रहे प्रश्नों तक का हल नहीं खोजते और संतुष्ट हो जाते हैं हमें अध्ययन मर्देव गहराई व विकास के कला चाहिए क्योंकि हम न केवल इस विषय से संबंधित कामी प्रश्नों के उत्तर देने में समर्थ होते हैं बल्कि इस विषय में अच्छे से ज्ञान में भी आ भाता है जिसका कारण यह होता है कि घाँटे परीक्षा में

कोई प्रश्न किसी भी तरह धुमा-फिरा कर पूछा जाये परंतु हम उत्तर दें पाते हैं और अच्छे अंक भी प्राप्त कर पाते हैं। किसी विषय का पर्याप्त ज्ञान होने से हम में आत्मविश्वासः भी बढ़ता है। जिसका लाभ हमें भाक्षात्कार् संबंधी परीक्षाओं में सर्वाधिक मिलता है।

अधूरा ज्ञान हमें सदैव असमंजस की स्थिति में छलता है और इससे हमारा आत्मविश्वास भी डगमगा भाता है। किसी विषय पर किया गया पर्याप्त चिंतन व अध्ययन हमें एक कुशल वक्ता भी करता है क्योंकि उसमें हम अपनी बातों को भी भली प्रकार से व आत्मविश्वास के साथ स्पौताएँ के समुखरूप पाते हैं। हमारे साथ उसमें भी ही नकता है कि शायद हम परीक्षा हेतु परीक्षा उपयोगी भास्तवी माल पढ़कर अच्छे अंक तो प्राप्त कर ले परंतु आगे जीवन में नोकरी हेतु भाक्षात्कार् में हमें हमारी यह प्रवृत्ति और अधूरा ज्ञान धोखा दे जायें।

अतः में यह कहना चाहती हूँ कि सदैव ज्ञानार्थी के लिए पढ़े, अतः में यह कहना चाहती हूँ कि सदैव ज्ञानार्थी के लिए पढ़े, विषय पर पर्याप्त विश्लेष पढ़ने के क्यान पर धोड़ा विस्तार से पढ़े, विषय पर पर्याप्त चिंतन मनन करें और फिर आप पांगे कि न केवल आप अच्छे अंक किंतु आप अपनी जिंदगी में आमानी से सफलता प्राप्त कर लैंगे।

भादना देवी  
ली० का० हि० दी० विशेष  
स्थाम वष्टि

# बाल - मजदूरी

जिस समाज में भेड़, बकरी शशीदरों के लिए १०,००० की आवश्यकता होती है, उसी समाज में एक बच्चे की कीमत २० रुपये लगायी जाती है। व्यवस्था और हालात एक माँ को अपना बच्चा बेचने पर मजबूर कर देते हैं। हो गेटी कर्माने के लिए अपना व्याप्रिमान तक गिरवी रखना पड़ता है। बाल मजदूरी के उन्मूलन के लिए आज तक आस्तीर्ण में आये तमाम आधिनियमों और आयोगों के गठन के बाबूद स्थितियाँ अस की तरह बनी हुई हैं।

बालक्षम भूम्पार में आतंकवाद के बाद दूसरी विकासाल भगव्या है। भारत में स्थितियाँ कहीं आधिक व्यक्तिनाक नहर आती हैं। अफगानिस्तान इस बात का है - "भूम्पार में" पास आने वाले कुल 24 करोड़ बाल क्षामिकों का 50% यानि 12 करोड़ सिर्फ भारत में पाये जाते हैं।"

हम अपने समाज में ऐसा कि हैं कि चाय की दुकान से लैकर कोयले की रवान तक बालक्षमिक हैं। किससे पता चलता है कि हमारा समाज धारितिक रूप से उद्धत न होकर पतन की ओर झगड़ा है। यह एक बड़ा स्वाल उठता है कि - जिस देश के भावी कर्णधारों के साथ, व्यवस्था का निव-

इस त्रिकार का खेल-खेल रहे हैं तो क्या किसी भी देश का विकास सम्भव है? आशिकि क्या कारण है, जिसके कारण मानवीय के बचपन को आग की भट्टी में झोका जा रहा है।

मेरी नजर में भवसे बड़ा कारण गतीवी है, दूसरा महत्वपूर्ण कारण है - 'अशिक्षा'। अशिक्षा के कारण ही व्याकुंठ आधिक से आधिक बच्चे अफर ऊपर बाले की हेन भमझकर करता रहता है। इसी बात उनके मास्तिष्क में यह भी रहती है कि जितने आधिक बच्चे होंगे उनका ज्ञान मूल्य भी उतना ही आधिक होगा।

जिसके कारण एक दिन दो बक्त की गोटी भी लाले पड़ भाते हैं और उन्हें बच्चों को ज्ञान के काल धूक में धकेलना पड़ता है।

एक बात यह है कि - क्या साल कानून बनाने से बालक्षम का अन्मूलन किया जा सकता है? कैसा करदृष्टि नहीं है। यह मनुष्य की नैतिक जिम्मेदारी है कि नैतिकता के आधार पर बालक्षम में लिप्त लोगों की तरफ से आंख मूँद कर न रहे, बल्कि अपने ज्ञान के, ज्ञान के अधिकारी के माध्यम से बालक्षम की शौकथाम में भूमिका निभारें। तभी वस भमझा से हृष्टकारा मिल सकता है अन्यथा नैतिक पतन निश्चित है।

भाष्यनादीवी

बी०३० हिन्दी (विशेष)

पृथम वर्ष

# भारतीय किसान

भारतीय किसान जो हमारे अननदाता हैं, जो सभी का पैट भरते हैं। लेकिन आज के समय में स्थिति इसके विपरीत नजर आती है। जो किसान हम सब की भूख मिटाता है आज वे गुवाह के लिए दो खुन की गोटी खुटाने में असमर्थ हैं।

भारत, जिसे कुछ कृषि सूचान देश कहा जाता है, जिसकी आधी से आधिक जनता कृषि कार्यों से खुड़ी हुई है। लेकिन यह हमारे समय की अत्यंत दुरुपय घटना कहे या बिंबना कहे कि अर्थव्यवस्था की चीढ़ि की हड्डी, केह भाने वाले किसानों की दशा अत्यंत दयनीय है। हर भाल अनेक किसान कृषि हेतु लिए हुए कर्ज को न चुका पाने के कारण या फसलों के उचित मूल्य न मिल पाने के कारण आत्महत्या कर लेते हैं।

दिन - प्रतिदिन किसानों के आर्थिक हालात और बिगड़ते जा रहे हैं।

हमारी सरकार को इस पर ध्यान



हैने की आति आवश्यकता है क्योंकि यदि इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो हो सकता है कि भविष्य में कृषि के होल में पूँजीपत्रियों का नियंत्रण क्यापित हो जाएगा। आम लोग कृषि से पलायन करने लगेंगे जो कुक दुरवद बात जावित होगी।

आज समय की माँग यह है कि फिर से कृषि के होल में सुधार किया जाए। फिर से देश में हनित क्रांति लाई जाए। लेकिन इस हनित क्रांति को पूरे देश में कुक समान लागू किया जाए। ताकि जो क्वामी पूर्व की क्रांति में रह गई थी उसे सुधारा जा सके।

किसानों के गिरते हुलातों के कारण ही आज के समय में किसानों के बच्चे किसान नहीं बनना चाहते। वे भी अपने सुरक्षित भविष्य के बारे में सोचकर किसान बनने के बजाए नोंकरी करना पसंद करते हैं। इसलिए इस विषय पर गर्भीता से सोचने की आवश्यकता है।

किसानों के सामने आर्थिक व्यवस्था के अतिरिक्त कई और समस्याएँ भी हैं जैसे आज दिन देश के अलग-अलग भागों में सूखे की स्थिति पेंदा होती रहती है। जिस कारण फसलों के कमाई के विपरीत उन्हें नुकसान उठाना

पड़ता है। इसके अतिरिक्त देश के किसानों का ज्यादा ज्ञान गठन कृषि की ओर आधिक रहता है। तथा किसानों में ज्यादातर अनपढ़ता और जागरूकता की भी कमी है। जिस कारण उन्हें नवीन तकनीकों और विकल्पों की ज्ञानकारी न के बाबर है जो उनकी दीनता का एक मुख्य कारण है।

**उपर्युक्तः-** भारतीय किसान का नाम सुनते ही हमारे मन में एक दीन-हीन लाचार और पीड़ित व्यक्ति की दृष्टि बनती है ये इसलिए है क्योंकि वर्षमान में किसानों की स्थिति वर्तमान में ऐसी ही है, इसलिए हमें किसानों की इस दृष्टि, दृष्टि को बदलने की आवश्यकता है। उनकी स्थिति को बदलने के लिए व्यवकार के अन्योग के आध-आध किसानों के अन्योग की आवश्यकता है।

नेहा कुमारी  
बी० ए० हिन्दी (विशेष)  
तृतीय वर्ष

# भारतीय नारी का बदलता स्वरूप

आधुनिक युग की शुरुआत से जीवन के हर ही समय में परिवर्तन आ गया। नारी की स्थिति सुधारने के लिए शास्त्रज्ञों ने सती स्वयाप्त किये जाने लगे। शास्त्र ग्रंथों का समाज सुधारकों ने सती स्वयाप्त किया। शिष्य, हत्या आदि कुश्चाओं का उटकर विरोध किया। स्त्री शिष्या तथा विद्वान् विवाह के स्मैतभावन के लिए सरकारी तथा जैन सरकारी संस्थाओं द्वारा स्वयाप्त किए गए। नारी सुधार आनंदीलन शुरू हुए। जागादी के बाद देश ग्रंथों लोकतंत्र स्थापित हुआ। नारी सामाजिक में स्थिरीयों की पुस्तक के घरातर दर्जा दिया गया। सौहानिक तथा कानूनी तौर पर नारी को वै समर्पित अधिकार प्राप्त हो गया जो युक्ति को उपलब्ध है।



आधुनिक नारी का उर्ध्वरूप तथा सौहानिक तथा रामणी नारी नहीं है। नई जीतना, नारी निराशों से युक्त नारी को ही आधुनिक कहा जाता है। आज की नारी को ही उत्तरों पर संवर्धन करना पड़ता है। पहला संवर्धन, समाज नारी को परमाणुगत दृष्टिकोण से देखता है। वहीं नारी आधुनिकता के नाम पर उच्छ्वसना को ग्रहण कर रही है। वह 'परिवार' नामक संस्था को निर्णयिता रामणी रही है। भारतीय नारी को चाहिए कि वह समाज की श्रेष्ठ जीतनीप्रयोग परंपराओं को बतीकार करके तिकारा के नाम आयाम प्राप्त करे।

उसके नारी पर आपना अधिकार समझता है। राष्ट्रान्तिक और पर वह नारी की स्वतन्त्रता का हिमायती है, परन्तु वाक्वानिक स्तर पर इसे प्रदान करने में हिचकता है। उच्च और शिक्षित क्षेत्र में भी इस कार्यक्रम संवर्धन बना रहता है। इस बात का उदाहरण महिला आरक्षण निवृत्यक है। सभी राजनीतिक दल इसी लागू करने का विरोध कर रहे हैं। सामान्य बुद्धि-स्तर के समुदाय में आज भी नारी जटिल परिविस्थापनियों में जीवन त्यतीत कर रही है।

नारी मुक्ति का प्रगति आदाएँ हैं - उसका आधिक स्वप्न की स्वतंत्रता होना। जब नारी आधिक स्वप्न से समर्प होगी, तब उसी निर्णय करने का अधिकार मिलेगा।

सनीहा कुमारी  
बी.ए.हिन्दी (विज्ञेय)  
स्थाम वर्ष

## मेरे सपनों का भारत...

मेरे जापनों का भारत...

'अतिथि देती भ्रतः' के उच्च आदर्शों की जागाहित कर तिथि पर्व पर अपनी ग्रैष धूमान रखता है। मेरे सपनों का भारत... रापना जी राकार है, जबका राग रायका तिकार है।

मेरे सपनों का भारत... जहाँ जाति-धर्म के मुद्दों की दरकिनार कर कौशलता और नागरिक स्फगता निर्मिति पर बल दिया जाएगा। जहाँ किसी भी वच्ची की खिलौनों की दुकान पर काग नहीं कल्पा पड़ेगा। किसी विद्यार्थी की शिक्षा के उचित गापदण्डों के लिए कांस्तर्प नहीं करना पड़ेगा। जिस जिले में आत्महत्या का आषार शुभार्थी या अकाल होगा, उस जिले का जिलाधीश बीघा जिमीदार होगा। मेरे सपनों का भारत... जहाँ किसी निर्भया की चीज़ नहीं होगी, वृहावस्था में माँ-बाप की अपने सच्चीं की श्रीस नहीं लैगी होगी। हाँ, मेरे सपनों का भारत भाघूचार से मुक्त होगा। यह एक ऐसा दैशा होगा जहाँ लोगों की अलाई करकार का एकमात्र एजेंडा होगा। स्वद्वनी के मुद्दे समुचित विकास की होंगी, सत्याज्ञन हारा लागू कानून कामाजिक कल्याण की होंगी।

मेरे सपनों का भारत... एक ऐसा स्थान होगा जहाँ लौग सुरा और संरक्षित महसूस करेंगे।

अंकिमा सिंह  
बी.ए. हिन्दी (विकीर्ष)  
तृतीय वर्ष

## विज्ञापन की दुनिया

आज की दुनिया विज्ञापन की दुनिया है, जहाँ से उपशोकता स्थान संकृति का सचार और सचार हुआ है, तब से विज्ञापनों की भवगार-सी आ गई है। आज प्रतियोगिता का समय है। बाजार में अत्यधिक कांक्षना है। इसलिए प्रतीक उत्पादक कम से कम दास लगाकर अधिक से अधिक लाभ अर्जित करना चाहता है। अपनी वस्तु की विक्री की बढ़ाने और अधिक से अधिक लाभ करने के लिए व्यापारी विज्ञापनों का साहस लेते हैं। विज्ञापन समाचार पत्रों के द्वारा, पत्रिकाओं के मालामाल से, रेडियो और टूर्टरनि के मालामाल से, बिलबोर्ड इपवाकर, दीवारों पर लगवाकर और उद्दीपक के द्वारा होयगा। करकर किए जाते हैं। कई बाद एक कम्पनी अपने सचार के लिए कई कई मालियों का बाहर लेती है।

कौति बामीलनों, दीवाली मैलों और अन्य कई एकार के कार्यक्रमों के विज्ञापन भी देखे जा सकते हैं। विज्ञापनों की माध्यम छड़ी आकर्षक और लक्ष्यदार होती है। वस्त्र आदि का विज्ञापन करते समय नाना सूकार की सुंदरियों की उपयोग में लाया जाता है। परिधान व्यावसाय में ती विज्ञापन सुंदरियों के बाहरी ही आगे बढ़ते हैं। विज्ञापन दाता विश्व सुंदरियों, अभिनेताओं और खिलाड़ियों का उपयोग करते हैं। वे उन्हें इसके लिए अच्छी सारी राशि देते हैं। कड़ी-कड़ी विज्ञापन दाता व्यक्तियों की घायिक साक्षात्कारों का भी पूरा-पूरा लाभ उठाते हैं।

दबाहै और दीपावली के अवसर पर मिठाई बनाने वाले अपनी खाति का पूरा पूरा लाभ उठाते हैं। विकापन की बढ़ीलत ही चालीसा रूपये की मिठाई उससी रूपये किलो विकती है। कई बार हम विकापनों की चकाचौंडा में रहने से जाते हैं कि शही निष्ठा नहीं ले पाते।

विलासिता की कस्तुओं के विकापन दैनंदिन उत्थादक लागत मूला से कई गुना अद्वितीय लाभ करते हैं। विशेषकर महिलाओं के उपयोग में आने वाली वस्तुओं की सूच कीमत बखूब ज्ञाती है।

कई बार विकापनों द्वारा दूसरों की इति की खराब करने का भी काम किया जाता है और कई बार द्यार्गिक विद्विष को भी छाड़करते हैं। आज विकापनों में शिर्यों का प्रयोग बहुत अद्वितीय बढ़ गया है। अद्वितीय अवस्थाओं में महिलाओं की किशाफित किया जाता है। सिनेमा के विकापन तो कई बार जीमा ही पार कर जाते हैं। अंगैजी किलों के विकापन और अनेक परिकार नगनता का प्रसारण करने में सावधिक आगे हैं। इस सकार के विकापनों पर जीक लगाई जानी चाहिए। विकापनों के पर्दे हमारे दृष्टिकोण बदला और नैतिक हीना चाहिए।

प्रिया

बी.ए. हिंदी (विशेष)

प्रशांत वर्ष

# अहमियत

इस क्षारनीन में कुछ सवाल और विचार मन से होकर गुज़रे। जिन पर सौच-विचार करने के लिए इस समय खुद को बाहर निकलने की आवश्यकता है। कुछ अनुचित बौल द्वां तो गाफि चाहूँगी क्योंकि आज कल आपनी सौच की अधिकारित करने से भी यह बहुत जल्दी दौल ढो सकते हैं।

इस कौरोना महामरी के चलते इंसान की इंसान की अहमियत तो बामहा आ गई है, आज लगभग सभी लोग उग्रान से बचके लिए प्रार्थना अवश्य कर रहे हैं। रोज-रोज कौरोना महामरी से पीड़ित और मृत्यु की प्राप्ति ही रहे लोगों के लिए बाधी के दिन आतुक हो गये हैं और दुआओं से भर आपे हैं, जो कभी अपने सामने तड़पते हुए, मरते हुए इंसान के लिए भी न हुए थे, इंसानों की एक-दूसरी की अहमियत का पता इस संकट मरी अवश्या में आकर लगा। उम्मीद करती हूँ कि आगे भी यह बाधी इस अहमियत पर गौर करेंगे, परन्तु एक बात अवश्य कहना चाहूँगी - अगर अभी भी इंसान की इंसान की अहमियत का उदाजा न हुआ तो गाफ कीजिएगा, कहो गर मजबूर हूँ, इंसानों से ज्यादा तो जानकरों की अब तक हारी अहमियत मालूम हो गई होगी।

मानसी  
ली. ए. डिन्डी (किशोष)  
हितीय वर्ष

## वसन्त ऋतु मेरे लिए

मनुष्य सूकृति की सीधी तरेर पर जुड़ा हुआ है। इस बात की सावित कर्णे के लिए किसी प्रगाढ़ की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि हम यह प्रतीक्षा अपने आस-पास दैख सकते हैं। सूकृति में ही रहे लदलावों का सीधा प्रगाढ़ हम पर पड़ता है। इस बात से कोई शी अनिष्ट नहीं है।

इसी तरह हम अपने आस-पास यह भी देख रहे होते हैं कि सूकृति में निरंतर कुद घट-घट रहा होता है। ठीक उसी प्रकार से मनुष्य के जीवन में भी ऐसे कुद घट-घट रहा होता है। दैनों की इस घटने और घटने की प्रक्रिया में बहुत-सी समानताएँ देखी जा सकती हैं।

चूँकि, यहाँ मेरा विषय 'वसन्त ऋतु' है तो हम केवल इसी उदाहरण के गाथाम से जगज्ञने का स्थान कर सकते हैं, कि सूकृति की कोई भी घटना बिना किसी उद्देश्य के नहीं होती। जिस प्रकार से हर पतझड़ के बाद वसन्त आता है ठीक उसी प्रकार त्यक्ति के जीवन में भी सुख और दुःख लगा रहता है। जिस प्रकार सूकृति प्रत्येक पतझड़ में वसन्त की आशा लेकर संपर्क रहती है और पतझड़ की पीड़ा को झौल वसन्त के आगमन का आनन्द लेती है ठीक उसी प्रकार त्यक्ति के जीवन में वीर्यार्थ की पीड़ा के बाद सुख की अनुग्रहि का वास्तविक आनन्द लाकित उठाता है।

नवीता

एम. ए. हिन्दी (विशेष)

प्रथम वर्ष

दर्शनवा

# क्या गलती थी उसकी?

आज अदालत की तरीख थी, वो जानता था क्या होने वाला है, फिर भी कभी न यूनी ढीने वाली उम्मीद बाँधकर सीकुड़े हुए थर्ट और कलीभ से घ्याहा मिलवटों वाली पेंट पहनकर वह घर से निकलने के लिये तैयार हुआ। वेसे तो वह कपड़े पहनने के सामले में शुरू से ही लापरवाह था पर खबर वह नाक घढ़ाकर बौलती थी कि पापा ऐसे ही जायेंगे चार लोगों के बीच? पापा थर्ट को इन कीषिएँ। गमहा क्यों लेलते हैं? शिखिएँ इसे। तो कुद्द बतैं मानकर कपड़े को ठीक करता हुआ घेहरे पर हँसी के साथ घर से बाहर निकल भाता था। पर आज वो टीकने के लिए नहीं थी। लम्स उसकी आवाज कमरे में गूँज गई। अनायास याहों के तूफान से वह पूरा सिहर गया और आँखों से बरसात ही गई। जिस तरह हर तूफान के बाद उझड़ा हुआ थाले फिर से बसता है ठीक उसी तरह उसने रुद्द को सम्भाला और बाल मड़क पर आकर आँरी में बेठ कोटि की ओर चल दिया। हुआ वही जिसकी उसे आँखें का थी अगली तारीख मिली और आज भी कोई फँसला न मिलने पर उसकी आँखों में निराशा की जगह अगली तारीख का कंतजार था। कोटि से लौटकर खबर वह अपने

कमरे में बैठा तो वह धटना उसके जहन में कोंधा गई। सवाल उठा, क्या गलती थी असकी? यह कि वह भपने बहुत ख्यास हैसती थी। यही कि बिना पंख के ही उड़ती थी।

असे अच्छी तरह याद है कि बाजहबीं पास करने के बाद वह किस तरह दिल्ली जाने के लिए जिरद कर अड़ गई थी जबकि जानती थी कि हौमियत नहीं है इमानी वहाँ के रखर्चे उगाने की फिर भी मना करने पर भमझाने पर जाट से कह देती कि मैं दृश्यान पढ़ाऊँगी। भक्ताम से आगे की पढ़ाई के लिए गदद लूँगी। और न जाने-क्या-क्या मुझे ही भमझा बैठती। पता नहीं उसे क्यों नहीं भमझ में आता था कि जब अपना भमय झगाब हो तो प्रश्नाई भी नाथ होड़ देती है और वह अपनी किस्मत और भनकार के सहारे दिल्ली जाना चाहती थी। जब मैंने एक दफा उसे बीला था कि 'टांग उतनी फैलाओ जितनी चादर हो', उसने जट से कहा था पापा चादर तो बहुत पहले फट-चुकी है और जब चाहे एड़ी दिखे या धुना क्या फक्के पड़ता है।

वैर उसकी जिरद के आगे में हार गया। और वह दिल्ली चली गई पढ़नी। आज भी भोजता हूँ तो आज्ञाचर्य होता है कि जिस लड़की की करमाइशी कभी नवल ही

नहीं होती थी, न जाने किस अंधेरी गुफा में ऐसे गई थी या गिर के दफन हो गई थी कि उन तीन वर्षों में उसने कोई क्रमाइश नहीं की। ना ही तो वह वही थी जिसने VII कक्षा में पिंक की खाद्य लूंबांटल उत्तीर्ण देने पर उस रात खाना नहीं खाया था।

ज्ञायद उसका हर्दि उसकी जहने की भारी सीमाएँ लाँघ जाता होगा तो कहती थी अपनी माँ से आज जीने में बहुत दर्द है, पूरी शरीर में अर्हिट है, और फिर सुबह तक न जाने क्या सौच कर कर देती थी कि असिडिटी हो गई थी, ज्ञायद सुबह कुद खाया नहीं था असलिए कमजोरी हो गई थी।

न जाने कितना अमङ्गाने और दबाव देने के बाद उसने पैसों की चिंता हौड़कर अक्षपताल की दृष्टिकोण लाँधी थी कभी उम्मीद से कि आई. स०.एम० बनने का अभी लम्बा सफर तय करना है, जिसके लिये स्वस्थ रहना जरूरी है। पर क्या पता था यह केमला गलत जावित होगा।

अभी भी नहीं भूल सकता हूँ कि कैसे उसके आविर्द्ध हिनों में हम लोगों के बीच आकर वो कितनी खुशी थी। कितनी खुश की छ छंसने वाली बात पर हैंसते-2

आँखों में पानी भर लेती थी। न जाने क्यों हम सब की  
बारी-बारी आँखों में पानी भर कर देखती थी। अपनी  
माँ से ऐसे चिपक-कर शौती थी कि बस चले तो उसके  
अन्दर ही बुद्ध को भमा हे। उसने मुझे एक शाम दृत  
पर बताया था कि जब वो अस्पताल गई इलाज कराने  
तो उसका डॉ. उससे बैहूद अच्छे से बेचा आता था।  
जैसता इलाज करता था, लीमाती व्यादा गंभीर नहीं थी  
इसलिए खल्द ही ठीक होने लगी थी। एक दिन डॉ. ने  
कॉल करके कहा कि मेरी रिपोर्ट के बारे में कुछ जानी  
बात करनी है इसलिए मिलना होगा मन तो नहीं था पर  
उसके अच्छे व्यवहार के कागज और बीते दिनों के मदद  
याद कर मैं राजी हो गई। हम एक काँफी छाँप पर मिले  
उसने मेरी रिपोर्ट या स्वास्थ्य के बारे में तो कोई चास  
बात नहीं की बस उसने बतना कहा कि वो मुझे पसन्द  
करता है, मैं उसे देखती रह गई। मैंने उसे मना  
किया और धबराहट में न भाने क्या-क्या कहा बस  
इतना याद है कि मैंने उससे यह बोला था कि मुझे  
आपसे इलाज नहीं कराना, उसने इस पर फिर एक  
बैहूद सुलझाई हुए झंगान की तरह मुझसे कहा था कि

मैं तुम्हें पसंद करता हूँ पर अकरी नहीं तुम भी करी, यह  
तुम्हारी मर्जी है। बस इलाज कुछ दिनों का है इसे बीच में  
न हीड़ो। उसकी बातों को सुन कर लगा कि सब नामिल हैं  
और मैंने इलाज जारी रखा। शायद वह दिल्ली आने से  
भी बड़ी गलती थी।

कुछ दिनों बाद पेट में अचानक दृष्टि उठा, दृष्टि भी इतना  
कि एकड़ा न हुआ खास किसी तरह दौस्त को कॉल कर  
बुलाया, उसने गंब्लेस बुलाया, अक्षपताल गई, अगले  
दिन आँख रुकी तो मैं झुमिट थी। दौस्त ने भी कुछ  
रखाया नहीं था तो कुछ रवाकर मैंने लिए कुछ चीजें लाने गईं  
थीं। मुझे बैचेनी हो रही थी जब वो आई तो पता चला  
कि बीते कुछ दिनों में मेरी बांडी में ऐसी दवार्ह गई है  
जिससे मेरी दोनों किडनी कैल और आधा से छ्यादा लीक  
हैं मैं चुका हूँ, और न जाने क्या-क्या हो गया था?  
और दवार्ह उसी ऊँटों द्वारा दी जायी थी।

आज भी जब उसकी बातें सौचता हैं तो भवाल उठता  
है कि आखिर 'क्या गलती थी उसकी'? यही कि उसने  
अपनी पसंद से समझौता नहीं किया।

हमने शिकायत दर्ज करायी, केस किया, पर पैसों की लाकड़

थोड़ी भारी पड़ रही है और चार ज्ञालों से मैं अद्वलत के खिलका लगा रहा हूँ, बस यह मीठ के कि जैसे जिदूर में मैं छार गया था तेसे जिदूर से भीत कर दिखाऊँगा।  
आज भी धार है कि किस बच्चेनी से उसने अपनी आँखें होशा के लिए गूँद ली थी।

मनीषा मिंह

बी०स० हिन्दी (विशेष)

प्रथम वर्ष

कहानी प्रतियोगिता - पुस्तकार्य (तृतीय)

# बैठियाँ भी पढ़कर नवाब बनती हैं

उत्तरप्रदेश के मुगादाबाद में एक द्वीप से गाँव गमपुर में एक हरि नामक किसान रहता था। उसके परिवार में पत्नी कमला तथा पुत्री मनु (५) और पुल आलीक (३) थी। इनका परिवार बेहद सामान्य था और गरीब था हरि ने ५ वर्ष की आयु में ही मनु का दासिला। गाँव के सरकारी विद्यालय गैर करवाया। उसका पुल आलीक मनु से २ वर्ष दीटा था। मनु पढ़ने में होशियार और समझदार थी। गाँव का विद्यालय १०वीं तक ही था और उस गाँव के लोगों ने परम्परा सी बनायी थी कि बैठियाँ बाहर पढ़ने नहीं आँयेंगी। उसी प्रकार मनु के साथ भी हीने वाला था। यह परम्परा को उसे तब बताया गया जब वह १०वीं उत्तीर्णि कर चुकी थी। मनु ने परम्परा को भवीकार नहीं किया। वह इस परम्परा को मिटाकर आगे बढ़ना चाहती थी। अब उसने अपने पिता से लिख कर गाँव के बाहर एक इष्टर कॉलेज में दासिला करवाने की कहा। पिताने, माँ ने भी मना किया। परंतु अपनी बेटी मनु का हौसला देखकर हरि दासिला करवाने के लिए तैयार हो जाता है। मनु इस सम्भावना से बहुत झुका होती है। अगले दिन वह प्रातः जल्दी उठकर दैनिक क्रियाएँ

क्ष तैयार हौ भाती है और पिता भी। पिता पहले शहर में  
जनाज बेचते हैं। फिर उससे जो घनवाणि मिलती है उसीसे  
मनु का हानिका कॉलेजमें करवा देते हैं। मनु की इतनी खुशी  
थी कि आप अन्दाजा नहीं लगा सकते हैं। अब शहर से कुद  
किताबें भी लेकर आये और कल से मनु को कॉलेज जाना  
था। उसका भाई छालोक भी उवीं पास क्ष चुका था। मनु  
अब कॉलेज जा रही थी तभी एक व्याक्ति धोड़ पर भवार  
और मनु के बास्ते पर झड़ा हो गया। और बोलता है - "ओ!  
हरिवा की धोरी ... कहाँ जा रही है। मनु ने कहा - "कॉलेज।"  
मनु पहचान भाती है कि ये गाँव के मुखिया का लड़का मलबान  
सिंह है।

मलबान सिंह - "तुमको हमरे गाँव का कानून नहीं भालूम का?"  
और धोड़ से नीचे उत्तर आता है। फिर मनु का हाथ पकड़कर दो  
धप्पड़ उसके गाल पर लगता है और बोलता है - - -  
"चल हम तुमको पढ़ाइब" - - - और कई सारी धमकियाँ  
देता है। मनु हाथ दुड़ाकर भाग भाती है कॉलेज की ओर।  
हरि को मुखिया मनु के कॉलेज जाने पर मना करता है  
और प्रताड़ित भी करता है जबकि हरि बिनती करता है पर्यु  
मलबान सिंह पर क उसके पिता पर कोई असर नहीं

पड़ता है मनु शैज की तरह फिर कॉलेज जाती है - माँ-पिता को प्रणाम कर।

हाँ - "देख लैटा ! कोई दिक्कत न आवे, हमसे सिर पर औंच न आवे।" मनु - "हम पूरी तरह इयल रखेंगे आपकी इच्छत और अपने लक्ष्य का और कॉलेज जाने लगती है।" फिर वह मलखाने सिंह उसी प्रताड़ित करता है यह काफी दिनों तक चलता रहा। लेकिन मनु ने कभी भी हार नहीं मानी।

लेकिन भाता-पिता अब काफी ध्यादा परेशान हो चुके थे। शैज की तरह मनु कॉलेज खा रही थी तभी माँ ने कहा - "मनु कुद्द क्रम करो ये कॉलेज जाना बन्द करो जासुल खाकर हमारे नाक कटवाइगी।"

मनु ने कहा - "माँ मुझे नहीं करनी शादी-वादी, मुझे बस पढ़ना है।" माँ - "बापू ने मना किया है कॉलेज जाने को अगर बात नहीं मानती हो तो बापू तुम्हें मार डालेंगे।"

मनु - "मना तो हमीं वहाँ भी हैं क्यों न लड़कर मरे, बापू भी तो हमलड़ने पाएँगे।" इसे पर मनु इच्छाजा खोलती है माँ - "हम नहीं जाने देंगे तुम्हें" (दुखी मन से)

मनु - "माँ आज कृष्ण और अंगूष्ठ की मत शैको आप लोग कृक ही ही आज मैं पहली लड़ाई लड़नी आए हूँ।"

तुमसे ध्यादा हमारा दूर कौन समझेगा ? कृष्ण माँ के दर्शने

ओर एक औंसत हीने के नाते तुमसे ज्यादा हमारा - -- "(दुखीमन से)  
माँ - "हाँ" बोल देती है और आशीर्वाद देती है। मनु बुझी  
होकर कॉलेज की ओर निकल पड़ती है।

गैर की तरह शर्त में उसी स्कार मलखान सिंह आ जाता  
है और हाथ में पिच्चौल लिये रहता है मनु भी एक लोंग  
की लाठी लिये रहती है। मलखान सिंह इस बार मनु को  
आन्तिम घोटानी देने आया था।

मलखान सिंह बोलता है - "लगता है तुम्हें अपनी जिंदगी से  
एयर-व्यार नहीं है।"

मनु - "मेरी लिए पढ़ाई से बढ़कर और कुछ भी नहीं है।"

मलखान सिंह - "तो तू नमझलै तुम्हार जिंदगी आज बताम् - "

और मनु की तरफ पिच्चौल उठाता है और बोलता है इस  
लाठी से हमार मुकाबला करूँगी।

मनु कुछ नहीं बोलती - उसके ऊपर तुल्त ही लाठी से बार कर  
देती है। मलखान सिंह गिर जाता है। और मनु के हाथ में  
पिच्चौल आ जाती है अब मनु उसके माथे पर निशाना लगाकर  
बड़ी ही जाती है।

मलखान सिंह - "पागल ही गई हो क्या - -- तुम लड़की ही लड़कियाँ  
झेसा नहीं करती।"

मनु - "हाँ! मही कहातूनी - -- लड़कियाँ ऐसा नहीं करती।"

लेकिन कोई उसके व्यूह के भार्थ बिलबाइ करता है तो वो कुछ भी कर सकती है।"

भयोग वश वहाँ कोई नहीं होता है कोकने वाला। मनु पिस्तोल चला हेती है उसके सिर पर गोली खाकर लग जाती है और अन्ततः वह मर जाता है।

उसके बाद मनु को मड़िय कैम के कार्यालय प्रवास कर लिया जाता है। मनु एक वर्ष तक जेल में ही पढ़ाई की। वर्ष बाद मनु को भच-भच धटनाओं से परिचय करवाने पर रिहा कर दिया गया। मनु अब 12वीं परीक्षा पास कर ली इसी समय उसके पिता हरि की दिल का होरा पड़ने से देहान्त हो गया। इस समय मनु बहुत ही दुखी हो जाती है। लेकिन माँ ने उसका हौसला बदाया। मनु अब अपने भाई का जाहर में। 12वीं छाविला करवाती है। मनु ने कुछ दिनों तक 'ज्वेती' में माँ के भार्थ काम किया फिर उसने अपना छाविला सेंट स्टीफेन्स डिल्ली विश्वविद्यालय में छाविला करवाने का निर्णय लिया। और वह अपने चाचा की मदद से छाविला करवा लेती है। उसके बाद उसी दूल्हति तो मिलती थी परंतु वह किताबों और खाने-पीने का ज्वचा नहीं बचा पाती थी। इसलिये वह बात को नोकरी भी करती थी। जैसे - जाइ, पोशा, बर्तन धोना इन कामों को कर वह अपना पैट भर पाती थी। माँ भी घर में अकेले पिता भी नहीं है।

आतोक भी । २वीं पास कर चुका था। उसका हासिला मनु ने हिन्दू कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) में करवाया। और हीनों के साथ रहने लगे। मनु की माँ को पता है क्या-2 कुनना पड़ता था। लोग कहते थे - "हीरी है क्या करनीगी?" अनेक यातनाएँ माँ को झोलनी पड़ी लेकिन माँ ने मनु की मना नहीं किया। माँ-बेटी को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती रही। मनु की माँ ने खेतों में अकेले संघर्ष किया। अपनी बेटा-बेटी को पढ़ाने के लिए अपना जबकुद बाहर दिया। दिल्ली-विश्वविद्यालय में वहाँ तरह-तरह के लोग, तरह-2 का जीवना, तरह-2 के कपड़े पहनकर ही आते थे, लेकिन मनु वही अपने स्कूल दिनों वाले कपड़े पहनकर ही आती थी। कभी-2 आकांक्षा कॉलेज में मजाक भी उड़ाया जाता था। लेकिन मनु इनसे कभी मन को हुँकी नहीं किया, और अपनी माँ के सपना को अपना मानकर आगे बढ़ती रही। मनु को ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में छालवृत्ति मिलने से वह माँ से पूछकर ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी जाने के लिए तैयार हो जाती है जिस दिन असे विदेश जाना था उस दिन उसके घास के भी कपड़े नहीं थे कि टिकट के लिए भी नहीं। वह दौरान में ही खेतों में काम कर रहे चाचा के पास गयी। चाचा कड़ी धूष में खेतों में काम कर रहे थे उसने सारी बातें बतायी चाचा ने। चाचा 'हों' बोल देते हैं और

धर बाकर कुछ अनाज बचते हैं जो धनराशि मिलती हैं अनाज बचने पर उसे मनुकी देती हैं। और मनुको आवासियां देते हैं। मनुका भाई आलौक भी कहता है, "माँ भोदी के दृष्टिकोण के लिए इकट्ठा की हो तो उसे दीदी की पढ़ाई पर लगा दी।" माँ भी देती हैं कुछ कपये जिससे उनके टिकट के लिए कपये इकट्ठा हो जाते हैं। आलौक हीठ था मनुसे पर्तु बड़े भाई की अहमियत निभारहा था। आलौक मनुकी हीड़ने प्रयत्नपूर्ण रात में खाता है टिकट वही करता है। और अपनी मनुदीदी को बाय करता है। मनु जब हवाई जहाज से यात्रा कर रही तब उसे सबकी बहुत याद आ रही थी कि मैं प्र०भी. मैं आराम कर देंगे जा रही हूँ और चाचा, माँ कड़ी धूप में गेहूँ काट रहे होंगे। यह सोचकर वह आँख बहाकर रुक्षा भी होती है। मनु हो वर्ष ऑफिसफोर्ड यूनिवर्सिटी में पढ़कर यूरोप में नौकरी मिल गयी जिसकी सेलरी 1,50,000 थी। मनु जब पहली सेलरी लेकर गांत पहुँची तो माँ चाचा और भाई के चेहरों पर रुक्षी अनोखी थी। परंतु मनु का यूरोप से भास्त आने का मन था वह सोचती थी कि मैं क्यों न अपनी भास्त की देशासीवा करूँ। पास - पड़ोसी और माँ की भी यही आस थी मुझसे। फिर वह UPSC की परीक्षा देती है जिसमें उन्हें IPS का पद मिलता है। मनुकी रुक्षी

का फ़िकाना न था। माँ व गांव वालों के गनु जैसी बेटी होने पर गर्व हैं। सिफ माँ व गांव वालों की नहीं पूरे भारत देश को गर्व है। भनु पर कि वह (उन्हीं) विदेश की नोंकनी दौड़कर भारत आईं का स्पष्ट किया। और अब देश। ऐसा मैं उट गयी। माँ ने कहा गनु के लिए - "मुझे गर्व है गनु जैसी बेटी की माँ होने पर। बेटियाँ कभी भी बेटों से कम नहीं होती। बेटियाँ भी पढ़कर नवाख बनती हैं।"

भाघना देवी

वी०१० हिन्दी (विशेष)

प्रथम वर्ष

कहानी त्रियोगिता - प्रथम पुस्तकार

# आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक भाषणमाला - ३९

विषयः द्रांसजेंडरः साहित्य, समाज और चुनौतियाँ

दौलत राम महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा ३ मार्च २०२० की आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक भाषणमाला - ३९ का आयोजन किया गया। जिसका विषय था - “द्रांसजेंडरः साहित्य, समाज और चुनौतियाँ”।

कार्यक्रम में अध्यक्ष के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से प्रौ. पूर्णचंद टैंडन, विषेष वक्ता के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से प्रौ. कुमुद शर्मा, मुख्य अतिथि के रूप में ‘माधी’ की प्रौग्नाम मैनेजर अमृता सरकार व मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. भानु अग्रवाल शामिल हुए। सभी अतिथियों, आचार्य डॉ. नविता गांग, विभाग की प्राद्यापिकाओं, सेवानिवृत्त प्राद्यापिकाओं द्वारा दीप लगावालित कर कार्यक्रम का आरम्भ किया गया। सभी अतिथियों का हर्बल पौधे द्वारा स्वागत किया गया।

विभागाध्यक्षा डॉ. ज्योति शर्मा जी ने हिन्दी विभाग की ओर से सभी का स्वागत और अभिनंदन करते हुए दीलतराम महाविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा “आचार्य हजारी प्रसाद द्वितीय स्मारक भाषणमाला” के शुभारंभ क्रम परम्परा पर प्रकाश दिला। उन्होंने बताया कि आचार्य हजारी प्रसाद द्वितीय स्मारक भाषणमाला, हजारी प्रसाद द्वितीय जी की स्मृति में वर्ष 1980 में दीलतराम महाविद्यालय के हिन्दी विभाग की प्राध्यापिकाओं द्वारा “आचार्य हजारी प्रसाद द्वितीय स्मारक भाषणमाला” का प्रथम आयोजन किया गया था। तब से दीलतराम महाविद्यालय का हिन्दी विभाग निरंतर भाषणमाला आयोजित कर रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि इसमें विषय का चरण समाजिक और साहित्यिक मूल्यों की नई दृष्टि क्रम में देखने के स्वाम रूप में होता है। इसी क्रम में इस बार 39वीं कड़ी के अंतर्गत ट्रांसजेंडर: साहित्य समाज और चुनौतियाँ विषय का चरण किया गया। जिससे हम उनके मन की बात और संघर्ष की निकट से जान सकते हैं।

सबसे पहले मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. भावती अग्रवाल ने अपने वक्तव्य का आरंभ द्वालाओं को ट्रांसजेंडर शब्द का अर्थ बताते हुए किया। उन्होंने ट्रांसजेंडर लोगों से जुड़ी समस्याओं को सभी के समक्ष रखा। उन्होंने LGBTIQ, Queer व Gender

जैसे विषयों पर द्वालाओं को अवगत कराया। उन्होंने अपने वक्तव्य द्वारा लोगों में ट्रांसजेंडर को लेकर भागकरता फेलाने का सुझाव दिया।

विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रौ. कुमुद शर्मा ने अपने वक्तव्य में द्वालाओं को ट्रांसजेंडर साड़िये के ऊपर विभिन्न साहित्यकारों की बचनाओं के माध्यम से समाज में ट्रांसजेंडर को लेकर सामाजिक धारणाओं से अवगत कराया। उन्होंने ट्रांसजेंडर लोगों की दशा को सुधारने के लिए लोगों के सोलाहित किया।

मुख्य अतिथि के रूप में अमृता भट्टकार ने अपने जीवन के अनेक अनुभवों को सभी के समक्ष साझा किया।

उन्होंने ट्रांसजेंडर लोगों के लिए बनारा ग्रन्ड कानूनों और उनके आधिकारों से सभी को अवगत कराया। उनका जीवन परिक्षम कामी के लिए प्रेरणादायक है।

व्याख्यान माला की अध्यक्षता करते हुए प्रौ. पूर्णचंद टैंडल ने ट्रांसजेंडर लोगों के प्रति सहानुभूति का भाव प्रस्तुते हुए विचारों को बदलने का सुझाव दिया। उन्होंने शिक्षा के व्यवस्था में परिवर्तन कर ट्रांसजेंडर वर्ग का एक मंगठन बनाने की भी जलाह दी। जिस से ट्रांसजेंडर वर्ग अबनी समस्याओं की सभी के समक्ष एक सकृद है।

इसके उपर्युक्त ट्रांसजेंडर से जुड़े अनेक सवन अमृता भट्टकार

से द्वालाओं और ग्रन्थम् प्राध्यापिकाओं द्वारा पूर्ण गया। अमृता जी ने बहुत गोचक अंदाज में जवाब दिया।

लेखक विभागाध्यक्षा डॉ. ज्योति शर्मा जी ने आज के त्रिशतादारी और मानवीयता के सद्गुणों से समान्वित व्याख्यान के उपर्यांत हिन्दी विभाग के सभी सदस्यों की ओर से धन्यवाद ज्ञापित किया।

संच भंचालन विभागाध्यक्षा डॉ. ज्योति शर्मा, डॉ. संतोष सेन और डॉ. कुमुम लता द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में द्वालाओं के फूड कृपन 'कैच' मसाले और 'फैस्ट फँडिया' के सौंधन्य से दिया गया।

# हिन्दी साहित्य परिषद्

## वार्षिक रिपोर्ट 2019-20

वर्ष 2019-20 में दौलतराम महाविद्यालय की 'हिन्दी साहित्य परिषद्' द्वारा अनेक साहित्यिक क्रार्यक्रम साम्पन्न करताएं गए जिसमें हिन्दी विभाग की प्राद्यापिकाओं एवं छात्राओं की शरपुर सहभागिता रही। 31 जुलाई 2019 की दौलतराम महाविद्यालय द्वारा नवागन्तुक छात्राओं के लिए 'ओरिएंटेशन डे' मनाया गया। हिन्दी विभाग की प्रथम वर्ष की छात्राओं की विभागाध्यक्ष डा. ज्योति नारा, डा. शीमा चावी, डा. सुनीता दुर्गंल, डा. अनीता गिंजे और विभाग की जानी प्राद्यापिकाओं और प्राद्यापक से परिचय कराया गया।

31 जुलाई 2019, हिन्दी विभाग, दौलतराम महाविद्यालय की साहित्यिक-सांस्कृतिक इकाई हिन्दी साहित्य परिषद के कार्यकारिणी सदस्यों का चुनाव डा. चंतीष रैन, डा. कुमुमलता और डा. बाजती की देखरेख गईं सफलतापूर्वक साम्पन्न हुआ। नव-निर्वाचित कार्यकारिणी सदस्य इस प्रकार हैं-

- अध्यक्ष - नाहिद प्रवीण (तृतीय वर्ष)
- उपाध्यक्ष - प्रियंका राय (तृतीय वर्ष)
- सचिव - वर्षि रानी (द्वितीय वर्ष)
- सहसचिव - नगमा (द्वितीय वर्ष)
- कौषाद्यक्ष - रिया (प्रथम वर्ष)
- सहकौषाद्यक्ष - मिया (प्रथम वर्ष)

इस वर्ष परिषद की 'संगीजिकाएँ' यीं- डा० ज्योति शर्मा, डा० संतीष सैन तथा डा० कुम्भलता जिनके मार्गदर्शन में परिषद के सभी कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए।

18 सितम्बर, 2019 को हिन्दी साहित्य परिषद द्वारा विभाग की द्वाजाओं के लिए 'निबन्ध व कहानी प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया, जिसके परिणाम इस प्रकार हैं-

कहानी प्रतियोगिता -

प्रथम पुरस्कार - साधना देवी (प्रथम वर्ष)

द्वितीय पुरस्कार - अंजू (द्वितीय वर्ष)

तृतीय पुरस्कार - उन्नेला (तृतीय वर्ष)

निषिद्धिक मण्डल - डा० संतीष सिंह व डा० राजवंती।

निबन्ध प्रतियोगिता -

प्रथम पुरस्कार - निवेदिता (तृतीय वर्ष)

द्वितीय पुरस्कार - निषानी (तृतीय वर्ष)

तृतीय पुरस्कार - तंदना बुडाकीरी (तृतीय वर्ष)

निषिद्धिक मण्डल - डा० संजा व डा० मीनाह्नी।

25 सितम्बर, 2019 को हिन्दी साहित्य परिषद द्वारा 'स्वचित कविता पाठ तथा आशुषापन प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया, जिसके परिणाम इस प्रकार हैं-

## स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता -

प्रथम पुरस्कार - मृजा द्वौ (द्वितीय वर्ष)

द्वितीय पुरस्कार - अंशिमा (तृतीय वर्ष)

तृतीय पुरस्कार - स्नीहा शिंह (प्रथम वर्ष)

निणियक मण्डल - सुश्री नितिशा खलसी व प्रियंका सौनकर

## आशुभाषण प्रतियोगिता -

प्रथम पुरस्कार - प्रिया (प्रथम वर्ष)

द्वितीय पुरस्कार - मुरकान (तृतीय वर्ष)

तृतीय पुरस्कार - अंजू (द्वितीय वर्ष)

निणियक मण्डल - सुश्री नितिशा खलसी व प्रियंका सौनकर

15 जनवरी, 2020 की हिन्दी साहित्य परिषद द्वारा 'लौकगीत तथा साहिलिक अंत्याक्षरी एवं प्रबन्धीतरी प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया, जिसके परिणाम इस प्रकार हैं-

## लौकगीत प्रतियोगिता -

प्रथम पुरस्कार - अंजलि (तृतीय वर्ष)

द्वितीय पुरस्कार - बबीता (प्रथम वर्ष)

तृतीय पुरस्कार - नंदिनी (प्रथम वर्ष)

निणियक मण्डल - डा. नीदू गुप्ता व डा. गनिष्ठी,

साहित्यिक अंत्याक्षरी एवं प्रबन्धीतरी प्रतियोगिता -

प्रतियोगिता के चार दल हैं स्कार हैं-

कवीरदास दल -

राजरानी, नैहा कुमारी (तृतीय वर्ष)  
तनुश्ची, शिलांगी गुप्ता (द्वितीय वर्ष)  
नंदिनी पुरीहित, खुशबू (प्रथम वर्ष)

तुलसीदास दल -

शिवानी, तरक्षणा (तृतीय वर्ष)  
साधाना, शालिनी (द्वितीय वर्ष)  
दिव्या, नंदिनी (प्रथम वर्ष)

सूरदास दल -

वंदना बुड़ाकीरी, तैजस्विनी (तृतीय वर्ष)  
अंजू, अच्छू (द्वितीय वर्ष)  
स्त्रिया, कनौहा (प्रथम वर्ष)

धनानन्द दल -

मुकिदा, मौनिका (द्वितीय वर्ष)  
उमिका, मृथिंका (द्वितीय वर्ष)  
मूनम, वसीता (प्रथम वर्ष)

प्रथम पुरस्कार - सूरदास दल

द्वितीय पुरस्कार - तुलसीदास दल

तृतीय पुरस्कार - कवीरदास दल

प्रत्येक दल की एक दासा की सर्वोच्च वक्ता का पुरस्कार -

अंजू (द्वितीय वर्ष) - सूरदास दल

शिवानी (तृतीय वर्ष) - तुलसीदास दल

नैहा कुमारी (तृतीय वर्ष) - कर्तीरदसा दल

अग्रिका (द्वितीय वर्ष) - घानानंद दल

निषायिक मण्डल - डा० नीतू गुला व डा० गीताक्षी

दिनांक २१ जनवरी, २०२० की दीलतराम महाविद्यालय के हिन्दी विभाग हारा बरांत पंचांगी के उपलब्ध में वायिकीताव का आयोजन किया गया। इन आवाराएँ पर विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं जिनके परिणाम इस प्रकार हैं-

एकांकी प्रतियोगिता -

प्रथम पुरस्कार - द्वितीय वर्ष

निकिता, बाह्यना, सृष्टि चतुर्वेदी, वंदना, शाल्मिनी, शिवांगी, तनुशी, अग्रिका, अदिति, अंगू, गानीइरा, राहनाम

सर्वश्रेष्ठ अभिनय - निकिता

द्वितीय पुरस्कार - तृतीय वर्ष

रानी गिरि, इति जिन्दल, दिवा दुष्मि, तेजस्विनी, नैहा कुमारी, वाजरानी, व्यापना, जीनू, बीनाली, वन्दना बुडाकीटी, निष्ठि पाण्डेय, अंशिमा, मुस्कान, आर्या

सर्वश्रेष्ठ अभिनय - इति व रानी

तृतीय पुरस्कार - प्रथम वर्ष

शिवानी, शिवानी कुगारी, रैशमी, रजनी, विद्यि, व्यालू, रजनी, बालौनी, अंबलि, नैहा, अंगलि मिश्ता, सरगम, तारा, पलक, पिंकी, प्रिया, राधिका

सर्वश्रेष्ठ अभिनय - शिवानी

निर्णयिक मण्डल - डा० नवाज़ नानी व डा० ज्योति शर्मा

### लौकनृत्य प्रतियोगिता -

प्रथम पुरस्कार - इति (तृतीय वर्ष)

द्वितीय पुरस्कार - निवेदिता (द्वितीय वर्ष)

तृतीय पुरस्कार - नानी व स्थिया

निर्णयिक मण्डल - डा० ज्योति शर्मा व डा० चुनीता दुर्गंह

### बंगली प्रतियोगिता -

प्रथम पुरस्कार - घरविर शास्ती टीम

द्वितीय पुरस्कार - रागविलास शर्मा टीम

तृतीय पुरस्कार - गीराबाई टीम

निर्णयिक मण्डल - डा० नीरा जलझाती व डा० मनीष कुमार  
चौधरी

### कार्ड मैकिंग प्रतियोगिता -

प्रथम पुरस्कार - अदिति शर्मा

द्वितीय पुरस्कार - सलीनी

तृतीय पुरस्कार - सलीनी कुमारी

निर्णयिक मण्डल - श्रीमती स्थियेंका विंह व डा० मनीष कुमार  
चौधरी

सभी प्रतियोगिताओं की विजेता दाताओं को पुस्तकें व  
प्रमाणपत्र देकर पुरस्कृत किया गया।

१९ फरवरी, २०२० की विष्णा द्वारा की इलाओं की संशोधनिक शास्त्र हेतु चूसजगह फर्जी लै जाया गया। वहाँ इलाओं ने डॉक्टर के साथ पारम्परिक खान-पान का आनंद लिया। तांगा, बैलगाड़ी, डॉक्टर और उन्हें की स्थारी का भी लुफ्त उठाया।

दौलतराम महाविद्यालय के हिन्दी विष्णा द्वारा ३ मार्च, २०२० को आचार्य हजरीप्रसाद टिवारी समारक शाष्ट्रमाला - ३१ का अर्थोंजन किया गया जिसका विषय शा-ट्रांसजेंडर : साहित्य, समाज और चुनौतियाँ। कार्यक्रम में अद्यास के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विष्णा से प्री-पूर्ववन्द टण्डन, विशिष्ट वक्ता के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विष्णा से प्री-कुमुद शर्मा, मुख्य अतिथि के रूप में 'साथी' की प्रीग्राम मैनेजर अग्रता सरकार त मुख्य वक्ता के रूप में डा. आक्ती अग्रवाल इामिल हुए। सभी अतिथियों, प्राचार्य डा. शाविता चौधरी, विष्णा की प्राविधिकाओं, सैतानिवृत्त प्राविधिकाओं हासा दीप-प्रज्ञवलित कल कार्यक्रम का आरम्भ किया गया। सभी अतिथियों का हस्ति पौष्टि द्वारा स्वागत किया गया।

हिन्दी विष्णा के सभी सदस्यों एवं इलाओं का धन्यवाद जिनकी उपस्थिति ने हासा संबल तथा।

परिषद की तर्फ़ान् की साहित्यिक गतिविधियों के लिए महाविद्यालय की प्राचार्य जी का आशार् जिन्होंने तर्फ़ान् हासा मार्गदर्शन किया।

संयोजक  
हिन्दी साहित्य परिषद

2019

साहित्य  
वर्ष २०२०



माजसी

हस्तलिखित पत्रिका

दीलतराम महाविद्यालय

“जिस भाषा उन्नति हो, सब उन्नति की मूल बिन निज भाषा ज्ञान के, मिएत न हिँड़ो की। बुले १”

अ आ ..... झ।  
ज्ञान, विज्ञान  
श्रोता, इतिहास  
योग, लरेगा

हिंका